मई (द्वितीय) 2021 | ₹ 30.00

चंपक

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

HAPPIER CHILDHOODS GUARANTEED

If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.

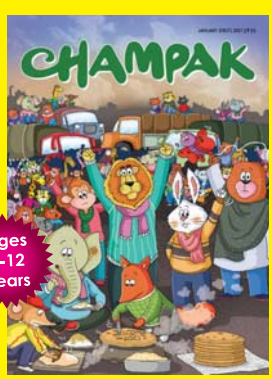

India's largest read children's magazine

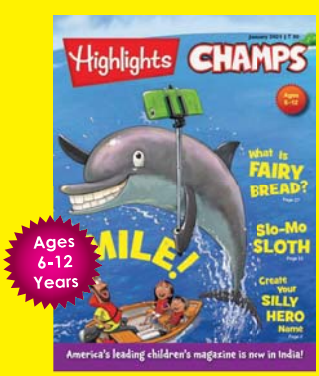

America's leading children's magazine is now in India!

America's leading early childhood magazine is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

चंपक

मई (द्वितीय) 2021 अंक : 1213

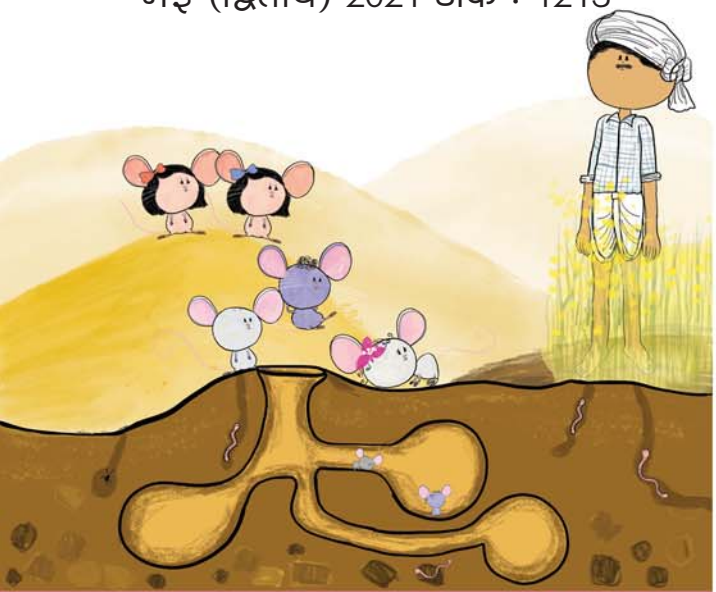

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

चंपकवन में शरणार्थी	4
रैना की पहाड़ यात्रा	12
दोस्ती	20
मिल गया खजाना	27
काला भूत	34
कैंप में चिप्स के पैकेट्स	46

मुखपृष्ठ

जब आप किसी ऐडवैंचर पर गए हों तो क्या आप ने किसी मजेदार चीज की खोज की है? किसी असाधारण चीज को पाने की इच्छा किसी भी पैमाने से परे होती है. अपनी कहानी आप हमारे साथ साझा करें.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	8
रास्ता बताओ	9
देखो हंस न देना	10
छिपे चित्र ढूंढ़ें	15
शब्दों को सुलझाएं	16
बताओ तो जानें	18
मक्खियों को ढूंढ़ें	19
बिंदु मिलाओ	26
चित्र पूरा करें	30
कौन सा कुत्ता किस का	31
स्मार्ट	32
अंतर बताओ	40
गलत को बताएं	41

चित्र कथाएं

डमरू और केबल टीवी	11
चीकू	24
दादाजी और अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस	42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	17
नन्ही कलम से	44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
वी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

चंपकवन में शरणार्थी

कहानी ● बिमल रावल

चंपकवन के महाराजा शेरसिंह सुबह समाचारपत्र पढ़ रहे थे. पड़ोसी जंगलों रैडवुड और ग्रीनवुड के बीच चल रहे युद्ध के समाचार से वे खिन्न हो गए थे. जब वे दोनों जंगलों के निर्दोष जानवरों के बारे में सोच रहे थे, तभी चंपकवन का सुरक्षा प्रमुख यानी सिक्युरिटी चीफ रौकी कुत्ते ने गुफा में प्रवेश किया.

रौकी ने कहा, ''महाराज, रैडवुड जंगल के कुछ जानवर हमारे राज्य के पश्चिमी भाग में घुस आए हैं और उन्होंने अस्थायी तंबू लगाना भी शुरू कर दिया है.''

''तुम्हारे कहने का मतलब है कि उन्होंने वहां पर शरणार्थी शिविर लगा लिया है?'' शेरसिंह ने पूछा.

रौकी ने कहा, ''हां महाराज, बिलकुल यही बात है जो मैं कहना चाहता हूं. वे शांतिप्रिय जानवर हैं और अपने जंगल से यहां भाग कर आए हैं, क्योंकि वहां उन की जान को खतरा है.

''उस इलाके का तापमान बहुत ही ठंडा है और रात के समय कंपकंपा देने वाली ठंडी हवा को बिना गरम कपड़ों और कंबल के झेलना बहुत ही मुश्किल होता है. उन के पास खाने के लिए भी पर्याप्त भोजन नहीं है. उस इलाके में हमारे जंगल के स्थानीय जानवर भी उन्हें झील से पानी नहीं पीने दे रहे हैं,'' रौकी ने विस्तार से बताया.

शेरसिंह गंभीर हो गए और एक पल सोचने के बाद उन्होंने कहा, ''धरती के सभी जानवरों को

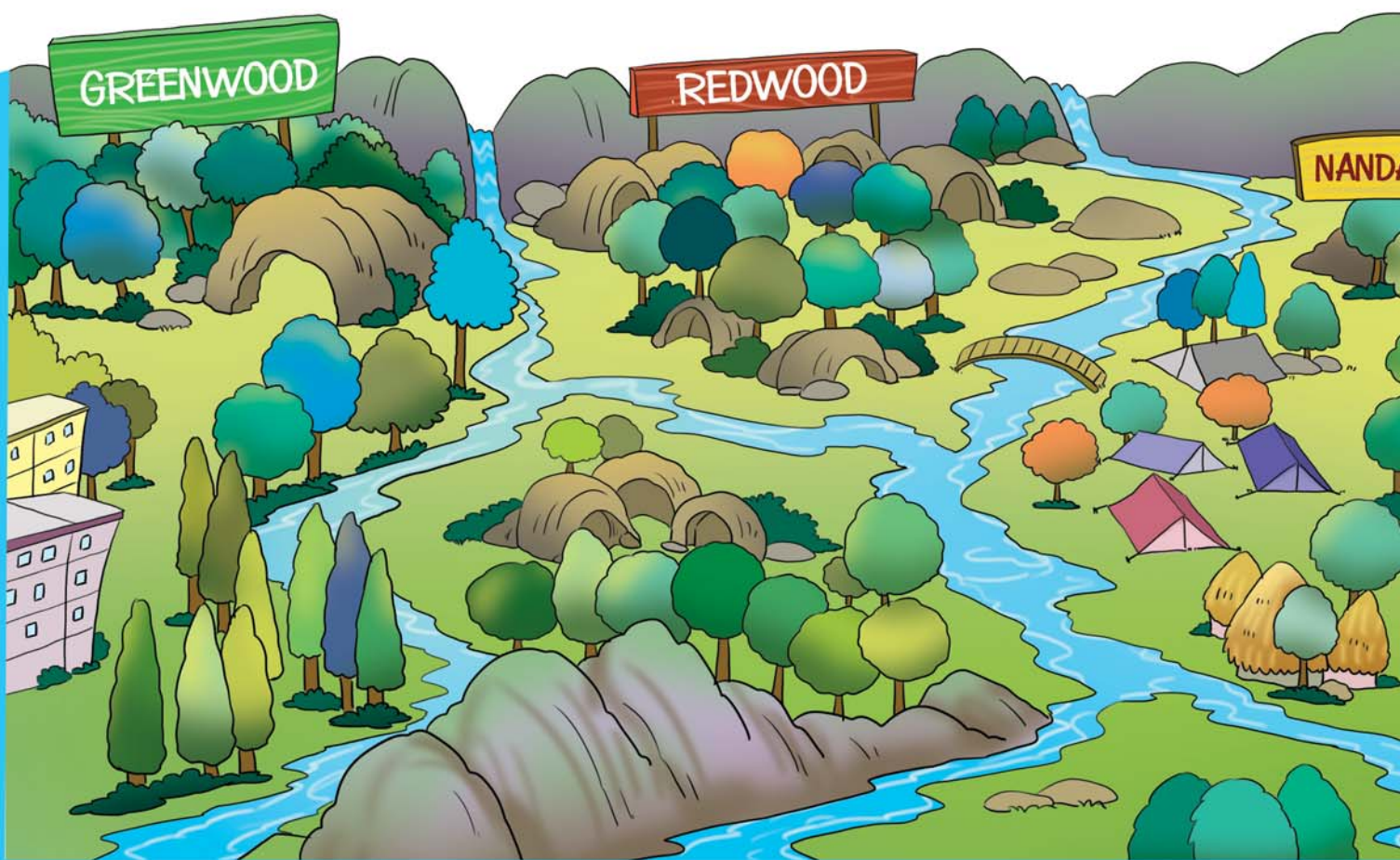

जीवनव्यापी आधारभूत सुविधाओं को पाने का अधिकार है जैसे खाना, पानी और आश्रय बिना किसी क्षेत्रीय भेदभाव के प्राप्त करना.'' अपने चेहरे पर एक गंभीर, सोचपूर्ण भाव लाते हुए उन्होंने मंत्रिपरिषद की एक आपातकालीन मीटिंग बुलाने के लिए रौकी से कहा और शरणार्थी शिविर से भी कुछ जानवरों को आमंत्रित करने को कहा.

कुछ देर बाद परिषद के सदस्य हंप्टी कौआ, टैडी भालू, फिशी लोमड़ी, टिनू बाघ, गजू हाथी और ऐडी बाज शेरसिंह की गुफा के बगल में बैठक वाली जगह पर बैठे हुए थे.

शरणार्थी शिविर की ओर से प्रतिनिधित्व करने लिए गिलू जिराफ और जिलू जेबरा भी मीटिंग में आ गए थे.

सभी जानवर वहां अपने बीच दो अनजाने जानवरों को बैठे देख कर हैरान थे और सभी आपातकालीन बैठक बुलाए जाने के कारणों को जानने के लिए उत्सुक थे.

शेरसिंह ने रौकी से हालात के बारे में सभी को बताने के लिए कहा.

रौकी ने चंपकवन में रैडवुड के जानवरों द्वारा बनाए गए शरणार्थी शिविरों के बारे में सभी को बताया और सभी का परिचय गिलू और जिलू से उन के प्रतिनिधि के रूप में कराया.

यह सुनते ही हंप्टी आक्रामक भाव से बोला, ''हमें उन्हें तुरंत चंपकवन से बाहर फेंक देना चाहिए,'' वह बहुत ज्यादा शोरशराबा करना चाहता था, लेकिन शेरसिंह के चेहरे का भाव ठीक नहीं था, इसलिए उस ने शांत बैठ जाने का फैसला किया.

टैडी ने कहा, ''मेरे विचार में जब तक दोनों जंगलों के बीच युद्ध समाप्त नहीं हो जाता है, तब तक हमें उन की मदद करनी चाहिए और उस के बाद उन्हें उन के जंगल में वापस भेज देना चाहिए.''

टिनू ने चिंता जताते हुए कहा, ''ऐसा कर के हम दोनों में से किसी एक राजा को चंपकवन का दुश्मन बना लेने का खतरा मोल लेंगे.''

जब सभी जानवर मुद्दे पर बहस करने में लगे थे, तो गजू चुपचाप बैठा हुआ था.

शेरसिंह जानते थे कि गजू के दिमाग में कुछ चल रहा है, इसलिए उन्होंने उस के विचार के बारे में पूछा.

गजू ने कहा, ''महाराज, मेरे विचार में गिलू, जिलू और रैडवुड के सभी जानवरों का हमें स्वागत करना चाहिए, क्योंकि वे निर्दोष और शांतिप्रिय हैं. वे जानते हैं कि चंपकवन शांतिप्रिय जंगल है और इसी वजह से वे यहां आए हैं.

''हमें चाहिए कि हम उन्हें रहने के लिए जगह उपलब्ध कराएं और अपने मैत्रीपूर्ण व्यवहार से उन्हें आरामदायक महसूस कराएं. इस से उन्हें इस विकट संकट की स्थिति में मिले मानसिक आघात से नजात मिलेगी और वे फिर से अपने जीवन को सुचारु कर सकेंगे. इस तरह वे हमारी संस्कृति के अंग बन जाएंगे. हमें चाहिए कि हम अपने स्कूलों से कहें कि एक स्कौलरशिप प्रोग्राम के तहत उन के बच्चों को आगे की पढ़ाई में मदद करें. हमें चाहिए कि उन्हें रोजगार के भी संभावित अवसर उपलब्ध कराएं,'' गजू ने सलाह दी.

''इस तरह वे अपने आवश्यक मूलभूत अधिकारों से वंचित नहीं होंगे. उन के राजाओं के युद्ध जब समाप्त हो जाएंगे, वे अपने जंगलों की तरफ वापस जा सकेंगे, अगर वे चाहेंगे तो हम उन्हें चंपकवन में ठहरने की अनुमति दे देंगे,'' गजू ने अपनी बात समाप्त की.

गजू से प्रभावित हो कर महाराज शेरसिंह ने कहा, ''मुझे गजू के इस तरह के मानवीय विचार पर गर्व है.''

टिनू ने कहा, ''मानवीय आधार पर मैं गजू से सहमत हूं, लेकिन शरणार्थी एक आर्थिक बोझ हमारे जंगल पर खड़ा कर देंगे और उस क्षेत्र में अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी.''

जिलू ने कहा, ''हम टिनू द्वारा उठाए गए मुद्दे

को समझ सकते हैं, लेकिन हम कुछ आधारभूत सहयोग के लिए सिर्फ आरंभिक स्थिति में दिए जाने हेतु गुहार लगाना चाहेंगे. चूंकि हम दक्ष और मेहनतकश जानवर हैं, इसलिए हम बाद में भी आप के अर्थतंत्र में बोझ नहीं बनेंगे. इस के अलावा हम आप के जंगल की आर्थिक उन्नति का हिस्सा बनने की कोशिश भी करेंगे.''

गिलू ने कहा, ''सभी शरणार्थी जानवरों की ओर से हम आप को आश्वासन देते हैं कि हम किसी भी स्थिति में आप के आदर और सम्मान को कम और विश्वास को गिरने नहीं देंगे, जो आप हमें देंगे. उस क्षेत्र की शांति और समरसता कभी भी बाधित नहीं होगी और व्यवहार से कोई भी खराब स्थिति उत्पन्न होने नहीं दी जाएगी.''

वहां पर उपस्थित सभी सदस्य गजू के तर्कों से संतुष्ट थे और गिलू और जिलू द्वारा दिए गए आश्वासन से काफी खुश थे.

शेरसिंह ने घोषणा की कि वे उन शरणार्थियों को चंपकवन में रहने की अनुमति प्रदान करते हैं. उन्होंने ऐडी और रौकी को उन के आश्रय, गरम कपड़े, कंबल और खानापानी का उचित प्रबंध करने के लिए कहा.

उन्होंने गजू से कहा कि शरणार्थी शिविर के बच्चों का स्कूल में दाखिला कराने की व्यवस्था करें और शिक्षा से कोई भी वंचित न रहे.

गिलू और जिलू ने शरणार्थियों जोकि रैडवुड जंगल से भाग कर वहां आए थे, की ओर से उन्हें एक बार फिर धन्यवाद दिया. अब चारों ओर खुशी का माहौल था. ●

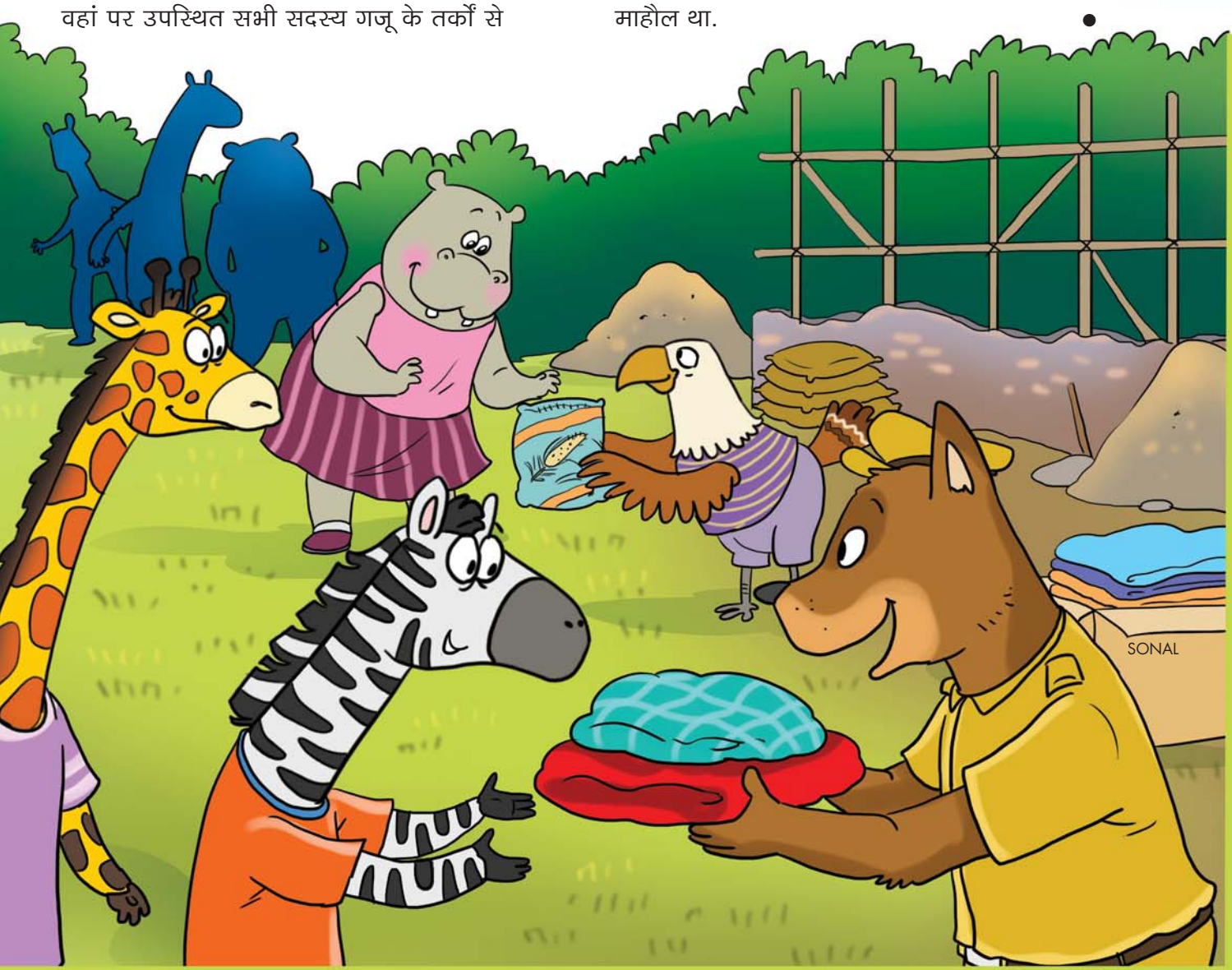

सुंदर रंग भरो

रास्ता बताओ

तपती धूप ने राधिका को बेहाल कर दिया है. गरमी से राहत के लिए रिफ्रैशिंग ड्रिंक प्राप्त करने में उस की मदद कीजिए.

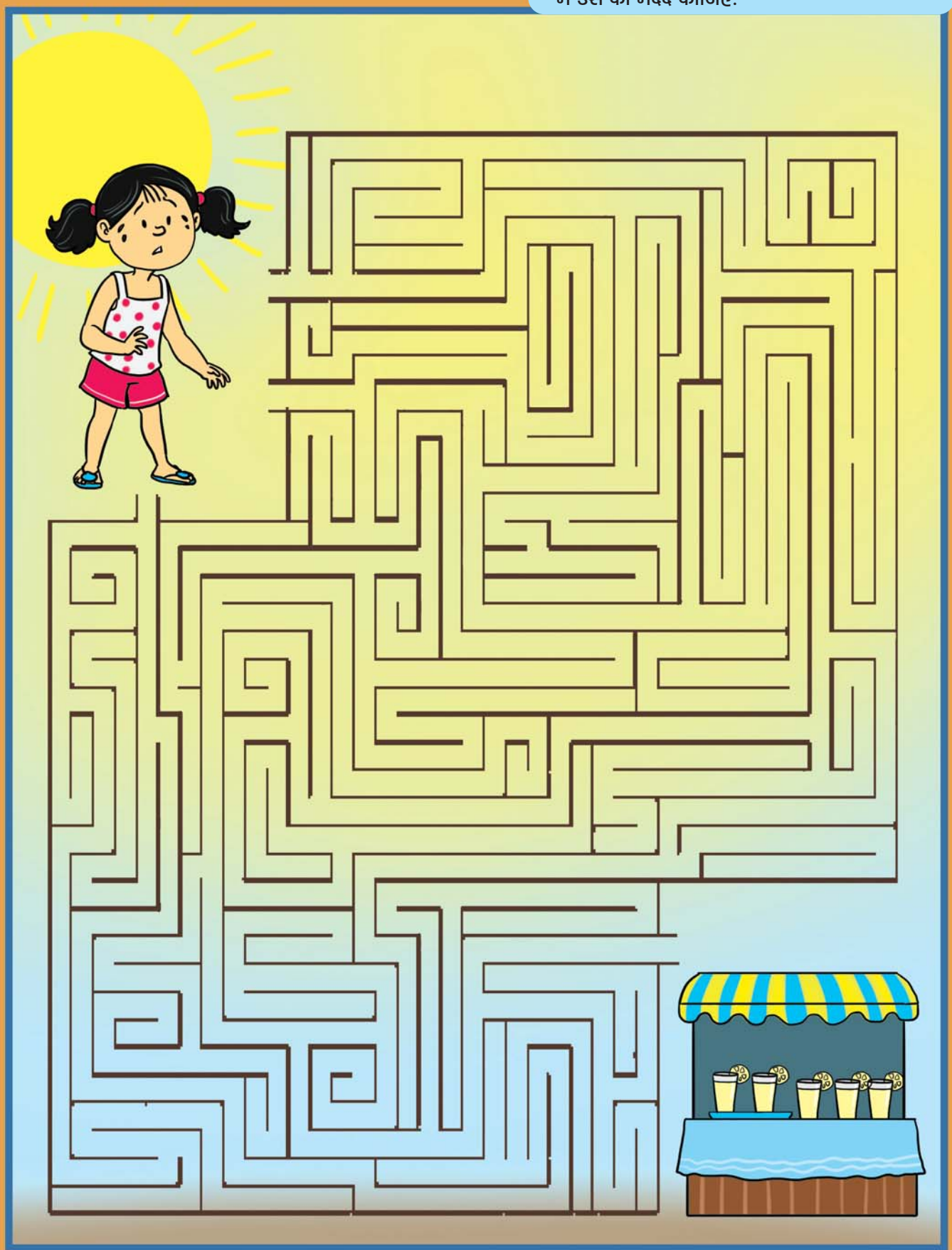

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

देखो हंस न देना

रोहन (पापा से) : पापा, मैं घर में रहते हुए घर का खाना खाखा कर थक गया हूं. मैं बाहर जा कर खाना खाना चाहता हूं.
पापा : ओके, कुछ प्लेटें उठा लो और उस में मम्मी द्वारा बनाया गया कुछ खाना रख लो और मेरे पीछे आओ.
रोहन : हम गार्डन में क्यों आए हैं, पापा?
पापा : तुम ने अभीअभी तो कहा था न कि तुम बाहर जा कर खाना चाहते हो.

इशिता, 13 वर्ष
इंदौर

केशव (विमल से) : सार्क ने जब क्लाउनफिश को खाया तो उस ने क्या कहा?
मिल : इस का स्वाद तो बड़ा मजेदार है.

राशिदा पतंगवाला, 11 वर्ष
गुजरात

रामू (शामू से) : तुम एक रैस्टोरैंट में जाते हो और मैं ने तुम्हें पांच इडली लाने को कहा. मैं ने तुम से पांचों इडली ले ली. अब तुम्हारे पास क्या बचा रह गया?
शामू : एक भी इडली नहीं बची.
रामू : गलत, तुम्हारे पास अभी सांबर और चटनी बची रह गई.

ध्वज मेहता, 8 वर्ष
बीजापुर

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

कुमुद (किशोर से) : एक हाथ से तुम हाथी को कैसे उठाओगे?
किशोर : पहले उसे एक पेपर पर ड्रा कर लूंगा. फिर हाथ में उसे उठा लूंगा.

सृष्टि जैन, 12 वर्ष, बैंगलुरु

बेटा (पापा से) : पापा, क्या आप अंधेरे में साइन कर सकते हैं?
पापा : हां, लेकिन तुम्हें यह क्यों चाहिए?
बेटा : क्योंकि मैं चाहता हूं कि आप मेरे रिपोर्टकार्ड पर साइन कर दो.

हृदय एम, 10 वर्ष
चैन्नई

कोमल (सूरज से) : तुम दो पेड़ों के बीच के अंतर को कैसे जानोगे?
सूरज : उन की सरसराहट की आवाज को सुन कर.

सैमयुक्ता टिलेकर, 10 वर्ष
नई दिल्ली

किट्टू (बिट्टू से) : म्यूजिक टीचर को सीढ़ी की जरूरत क्यों पड़ी?
बिट्टू : वह हाइनोट्स तक पहुंचना चाहता था.

जिगन्यासु चामवाला, 9 वर्ष
अहमदाबाद

टीचर (छात्र से) : इन में से कौन दूर है, नई दिल्ली या चांद?
छात्र : नई दिल्ली.
टीचर : यह कैसे हो सकता है?
छात्र : मैम, हम चांद को देख सकते हैं, लेकिन नई दिल्ली को देख नहीं सकते हैं.

विनायक भोसले, 11 वर्ष
मुंबई

बंटी (सीटू से) : सूरज कालेज क्यों नहीं गया?
सीटू : क्योंकि उस के पास पहले से ही लाखों डिग्रियां हैं.

निकुंज पारिख, 8 वर्ष
बैंगलुरु

मम्मी (पिंटू से) : चुपचाप बैठे रहो, शरारत की तो मारूंगी.
पिंटू : तुम ने मुझे मारा तो मैं टिकट चेकर अंकल को अपनी उम्र बता दूंगा कि मैं 4 साल का नहीं 3 साल का हूं.

अश्विनी कुमार, 12 वर्ष, मंडावली
दिल्ली

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 9619587613**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और केबल टीवी

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

रैना की पहाड़ यात्रा

कहानी ● आशा शर्मा

रैना चुहिया गरमी सहन नहीं कर पाती थी. इसलिए इस बार उस ने फैसला किया कि गरमी से बचने के लिए पहाड़ों की सैर करेगी, लेकिन वह वहां जाएगी कैसे? ये तो उस ने सोचा ही नहीं था. इन दिनों वह दिनरात इसी उधेड़बुन में लगी रहती थी.

रैना रेगिस्तान में एक रेत के टीले पर बिल बना कर रहती थी. केवल वही नहीं, यहां उस की कई सहेलियां रहती थीं. गरमी की दोपहरी में जब रेत तपने लगती थी तब उस का बिल जैसे भट्टी बन जाता था. वह शाम होने के इंतजार में बिल के भीतर रहती. शाम को जैसे ही सूरज ढलता तो रेत ठंडी हो जाती थी. तब वह टीले पर अपनी सहेलियों के साथ खूब मस्ती करती. रेत पर उन के पंजों के निशानों से बहुत ही सुंदर डिजाइन बन जाता था.

यह टीला एक खेत में था. किसान यहां गेहूं और चना बोता था, जिस की फसल की कटाई गरमी से पहले होती थी. जो दाने कटाई के बाद जमीन पर बिखर जाते थे. वही रैना और उस की सहेलियां अपने भोजन के लिए जमा कर के रख लेती थीं.

आज जब किसान अपने खेतों की देखभाल करने आया तो रैना ने देखा कि उस के पास कपड़े का एक थैला भी था. रैना उत्सुकता से उस के पास गई तो उसे वह थैला बहुत ठंडा लगा. रैना थैले से चिपक कर बैठ गई. थैले के नजदीक बैठने पर रैना को बहुत अच्छा लग रहा था. उस ने थैले के भीतर झांका तो देखा कि उस में एक ठंडे पानी की बोतल रखी थी. थैला उसी बोतल के कारण इतना ठंडा था.

‘काश, ऐसा थैला मेरे पास भी होता तो गरमी कितनी मजेदार हो जाती,’ रैना ने सोचा और ऐसा सोचते ही उस के दिमाग में एक अन्य विचार आया.

‘क्यों न मैं इस थैले को ही अपना घर बना लूं?’ यह सोच कर रैना खुशी से उछल पड़ी और उत्साह में भर कर थैले को अपने पैने दांतों से काटने लगी. तभी एक और विचार उस के दिमाग में आया.

‘यदि मैं ने थैले को काट दिया तो किसान को पता चल जाएगा और वह मुझे थैले से निकाल कर बाहर

फेंक देगा,' यह खयाल आते ही रैना ने थैले को काटना छोड़ दिया और उस के अंदर छिप कर बैठ गई.

थैले में छिपी रैना किसान के साथ उस के घर आ गई. घर आ कर किसान ने वह थैला खूंटी पर टांग दिया. जब किसान इधरउधर गया तो मौका देख कर रैना उछल कर थैले से बाहर कूद गई.

रैना को बहुत भूख लगी थी, इसलिए वह भोजन की तलाश में पूरे घर में घूमने लगी. उस की नाक में घी से चुपड़ी ताजी रोटी की महक आ रही थी. वह रोटी की खुशबू के पीछेपीछे रसोई की तरफ बढ़ने लगी. सामने ही उसे वह रोटी दिखाई दे गई. रैना लपक कर रोटी पर झपटी, लेकिन ये क्या खचाक की आवाज के साथ रैना तो पिंजरे में कैद हो गई.

रैना की घिग्घी बंध गई. अब बाहर कैसे निकलेगी? उसे अपने मम्मीपापा और दोस्तों की याद आने लगी. रैना रोने लगी. तभी उस ने पिंजरे के आसपास एक मोटी बिल्ली को घूमते देखा. बिल्ली पिंजरे के पास आ गई. वह पिंजरे को सूंघने लगी. रैना की जान सूख गई. वह डर के मारे पिंजरे के कोने में दुबक गई.

रैना चुपचाप वहीं पड़ी रही. देर रात एक छोटी बच्ची पानी पीने के लिए रसोई में आई. उसे देख कर रैना उछलकूद करने लगी. आवाज सुन कर बच्ची पिंजरे के अंदर देखने लगी. रैना अपनी पिछली दोनों टांगों पर खड़ी हो कर उसे करतब दिखाने लगी. बच्ची खुश हो कर ताली बजाने लगी. रैना अपनी पूंछ को मुंह में दबा कर गोलगोल घूमने लगी. बच्ची ने उत्साह में आ कर उसे गोद में लेना चाहा और पिंजरे का दरवाजा खोल दिया.

रैना इसी अवसर की तलाश में थी. वह फौरन पिंजरे से बाहर निकली और भाग गई.

भूखीप्यासी रैना भागती रही. तीन दिन बाद गिरतीपड़ती किसी तरह

मई (द्वितीय) 2021

वह अपने टीले तक पहुंची. अपना बिल देख कर उसे इतना अच्छा लगा, मानो दुनिया की सब से सुरक्षित जगह यही हो. रैना अपने बिल में घुसने लगी तभी उस के दोस्त वहां आ गए.

''रैना, तुम कहां गायब हो गई थी?'' उस के दोस्तों ने पूछा.

''मैं पहाड़ पर घूमने गई थी. आह, वहां कितनी ठंड थी, मजा आ गया,'' रैना ने पूंछ उठा कर बड़े रौब से कहा. सब दोस्त उसे आश्चर्य से देख रहे थे. उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि तीन दिन में कोई पहाड़ पर जा कर वापस कैसे आ सकता है? शायद हवाई जहाज में लटक कर गई होगी. वे उसे पूछना ही चाह रहे थे. तभी सब ने किसान को खेत की तरफ आते हुए देखा.

किसान को देखते ही रैना दौड़ती हुई अपने बिल में जा कर छिप गई. अब तो उस के दोस्त और अधिक हैरान थे.

''रैना, हमें अपनी यात्रा के बारे में तो बताओ,'' दोस्तों ने कहा.

''अभी नहीं, मैं आप को शाम को बताऊंगी. अभी बाहर बहुत गरमी है. मुझे पहाड़ याद आ रहे हैं,'' रैना ने किसान की तरफ देखते हुए जवाब दिया और अपने बिल में बहुत अंदर तक जा कर छिप गई.

उस के दोस्त अब भी समझ नहीं पा रहे थे कि रैना किसान को देख कर इतना डर क्यों रही है और तीन दिन में वह पहाड़ की यात्रा कर के वापस कैसे आ गई.

''निश्चित रूप से वह हवाई जहाज में ही गई होगी,'' दोस्तों ने आपस में कहा और रैना की पहाड़ यात्रा से ईर्ष्या करते हुए अपनेअपने बिलों में घुस गए. बाहर गरमी बहुत थी. ●

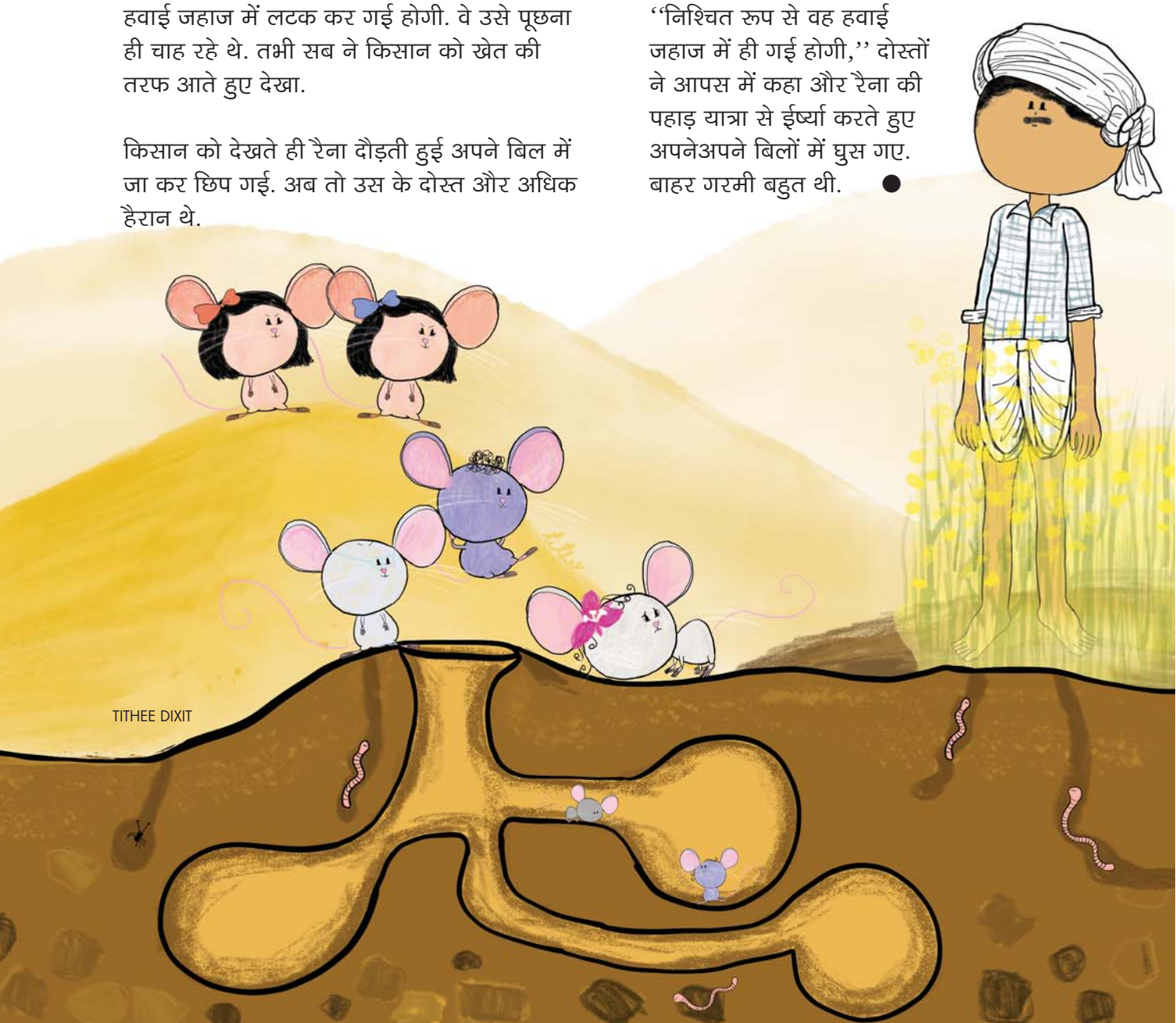

TITHEE DIXIT

छिपे चित्र ढूंढ़ें

राहुल, रीमा और उन का परिवार ट्रैकिंग पर गए हैं, उन्होंने अपना कुछ सामान खो दिया है. उसे ढूंढ़ें.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

शब्दों को सुलझाएं

21 मई को लुप्तप्राय प्रजाति दिवस है. नीचे के शब्दों को जो उल्टेसीधे लिखे हैं, उन्हें सुलझाएं ताकि लुप्तप्राय जानवरों की पहचान हो सके.

1 घबा

2 इंजाट डापां

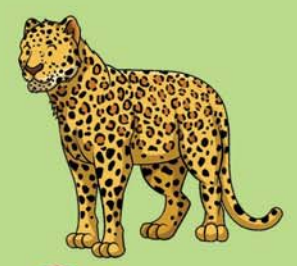

3 आतेंदु

4 ड़िभेया

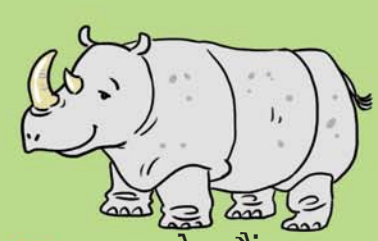

5 सदफे डागैं

6 वीध्रुय लूभा

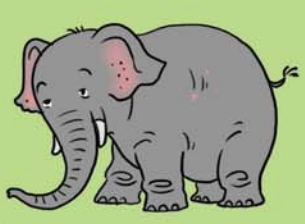

7 सिएईया थीहा

8 ब्बबर रशे

9 महि दुतेंआ

10 लूह लल्हे

11 जागं रसि लावा जबा

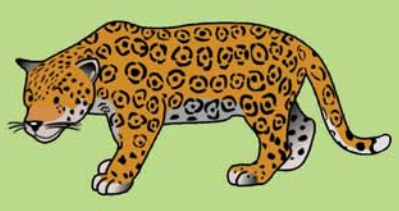

12 आजैगूर

13 लला डापां

14 पिंहूग नक्रे

15 लागैपैसगो इगुपेंग

16 रिगोलाल

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

मजेदार विज्ञान

पानी में भी अपनी उंगली को सूखा रखें

एक असाधारण ट्रिक की खोज करें.

आप को चाहिए :

● दालचीनी का पाउडर ● एक गिलास पानी

ऐसा करें :

1. दालचीनी पाउडर को गिलास के पानी में छिड़क दें ताकि यह एक परत बना ले.

2. अपनी आधी उंगली गिलास में डुबोएं और फिर निकाल लें.

देखें :

जब आप अपनी उंगली पानी में डुबोते हैं और उसे बाहर निकालेते हैं तो वह अभी भी सूखी रहती है.

सोचें :

उंगली पानी में सूखी कैसे रह जाती है?

दालचीनी का पाउडर हाइड्रोफोबिक पदार्थ यानी जल विरोधी वस्तु है. हाइड्रो का मतलब जल और फोबिक का मतलब विरोधी होना है यानी जल विरोधी वस्तु. इस का मतलब है यह पानी में नहीं घुलता है. इसलिए जब हम दालचीनी के पाउडर से हो कर अपनी उंगली गिलास में डुबोते हैं, तो यह उंगली के चारों ओर परत बना लेता है और इसे पानी से नहीं भीगने देता है. जब हम अपनी उंगली को बाहर निकालते हैं, तो इस से वह सबकुछ जो चिपका हुआ होता है, सूखा पाउडर होता है जो हमारी उंगली को सूखा बनाए रखता है.

दालचीनी का पाउडर एक हाइड्रोफोबिक पदार्थ क्यों है?

दालचीनी पाउडर के अणु अध्रुवीय होते हैं, इस का मतलब है कि इस में किसी भी तरह का आवेश नहीं है, जबकि पानी का अणु ध्रुवीय है यानी इस में एक आवेश होता है. दो वस्तु आपस में मिल जाती हैं अगर वे दोनों आवेश वाले हों चूंकि दालचीनी के पाउडर में कोई भी आवेश नहीं है, इसलिए इस के अणु पानी के अणु की ओर आकर्षित नही होते हैं और इसीलिए दालचीनी पाउडर पानी में घुलता नहीं है.

पता करें :

हम चमड़े के जूतों को वैक्स यानी मोम से क्यों पौलिश करते हैं?

वैक्स पौलिश चमड़े के जूतों में एक अच्छी चमक देती है, लेकिन सब से खास बात यह है कि यह जूते में नमी या पानी को लगने से रोकती है. इस से आप के जूते लंबे समय तक टिकाऊ बने रहते हैं, साथ ही दिखने में भी अच्छे रहते हैं. हमारे प्रयोग के दालचीनी पाउडर की तरह ही वैक्स यानी मोम भी हाइड्रोफोबिक पदार्थ है जो पानी में नहीं घुलता है. इसी वजह से जिस जूते को वैक्स के साथ पौलिश किया गया होता है, उस पर से पानी फिसल जाता है. कहने का मतलब जिस पर वैक्स पौलिश लगाई गई है, उस पर पानी नहीं टिकता.

बताओ तो जानें

1. सामान्यतया मैं हरा हूं
भूरा या मटमैला मेरा तन
चिड़ियों का मैं घर हूं
बारिश ही है मेरा लंबा जीवन.

2. मैं एक बौल हूं
मैं गोलगोल घूमती हूं
लेकिन कभी बाउंस नहीं होती
न ही मुझे फेंक सकते हो.

3. सुबहसुबह आता हूं
दुनिया की खबर सुनाता हूं
मेरे बिना उदास हो जाता
सब का प्यारा रहता हूं.

4. काला रंग मेरी शान
सब को मैं देता हूं ज्ञान
शिक्षक करते मुझ पर काम
नाम बता कर बनो महान.

देखें तुम कितना जानते हो

1. हवा की आर्द्रता यानी नमी किस पर निर्भर करती है?
(क) तापमान
(ख) स्थान
(ग) मौसम
(घ) ऊपर के सभी

2. साइकिल की खोज किस ने की थी?
(क) किर्क पैट्रिक मैकमिलन
(ख) कार्ल बेंज
(ग) एवैंजेलिस्टा टौर्रिसेल्लि
(घ) लियो बैकेलैंड

3. इन में से किस के लिए संक्षिप्त शब्द 'सीडी' का सामान्यतौर पर उपयोग होता है?
(क) कमांड डिस्क्रिप्सन
(ख) कम्पैक्ट डिस्क
(ग) कौपी डैंसिटी
(घ) चैंज डाटा

4. इन में से कौन सी सब से हल्की धातु है?
(क) पारा (मरक्यूरि)
(ख) शीशा
(ग) लीथियम
(घ) सिल्वर (चांदी)

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1-घ, 2-आठ की पुतली, 3-अखबार, 4-स्कैकवेड.

उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1-घ, 2-क, 3-ख, 4-ग.

मक्खियों को ढूंढ़ें

20 मई को विश्व मक्खी दिवस है. यहां पर दो अलगअलग किस्म की मक्खियां हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

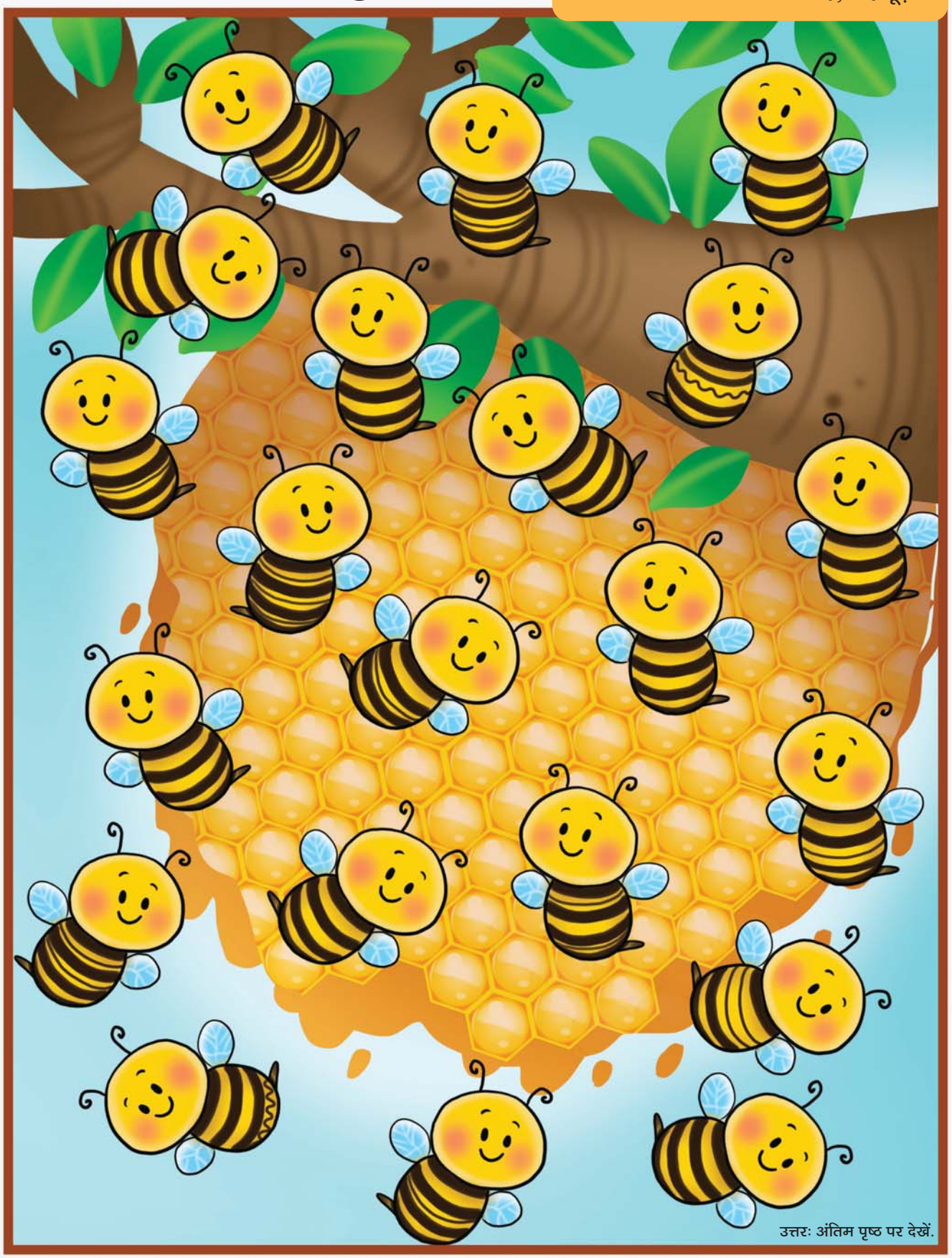

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

दोस्ती

कहानी ● मधु गोयल

बच्चों के एक ग्रुप ने अपने पास के ही पार्क में वीकेंड पर दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया. उन्होंने खुशी जाहिर करते हुए, पैसे इकट्ठे कर के विनर को गिफ्ट देने का प्लान बनाया.

बैंच पर बैठा रोहन, हर सप्ताह आ कर बच्चों को दौड़ते हुए देखता और मायूस हो कर चला जाता. ऐसा हर वीकेंड पर होता.

सोहन पिछले वीकेंड से ही रोहन को देख रहा था. वह रोहन के पास गया और बोला, ''भाई, तुम मायूस क्यों बैठे हो? आओ, तुम भी हमारे साथ दौड़ का मजा लो, देखो कितना अच्छा लगता है.''

रोहन ने कहा, ''नहीं, नहीं आप दौड़िए.''

''क्यों भाई, तुम्हें दौड़ना अच्छा नहीं लगता?'' सोहन ने पूछा.

''नहीं, ऐसा नहीं है, इतना कह कर रोहन की आवाज कंठ में ही रुक गई, वह बोल नहीं पाया.

''अरे, क्या हुआ... तुम्हें मेरी बात पिंच हुई?''

''नहीं, ऐसा नहीं है,'' रोहन ने जवाब दिया.

''तो फिर चुप क्यों हो गए, मेरे भाई?'' सोहन ने पूछा.

रोहन अपने आप को संभालते हुए बोला, ''वो क्या है कि मैं ऐक्सीडैंट में अपना एक पैर गवां चुका हूं.''

''ओह, वैरी सौरी, लेकिन आज से हमतुम दोस्त हैं,

हाथ मिलाओ, मैं अपने दोस्तों से तुम्हारा परिचय करवाता हूं, क्या नाम है तुम्हारा?''

''रोहन...''

''मेरा नाम सोहन है, देखो, हमारे नाम कितने मिलते जुलते हैं... रोहन और सोहन.''

सोहन, रोहन को समझाते हुए बोला, ''परेशानियां आती हैं और चली जाती हैं, इसी का नाम जिंदगी है मेरे दोस्त.

''तुम परेशान मत होना... मेरे दोस्त, आज के समय में सब संभव है, कृत्रिम पैर भी आते हैं, जिस को लगवाने पर तुम सुचारु रूप से जीवन जी सकोगे. इस बात को इतना महत्त्व मत दो कि तुम विकलांग हो. अपने सपनों को पूरा करो. पौजिटिव एटीट्यूड रखो यार.

''तुम ने अरुणिमा सिन्हा का नाम तो सुना ही होगा, वह विकलांग होने के बाद भी ऐवरेस्ट पर चढ़ी.''

रोहन ने कहा, ''हां, आर्टिफिशियल पैर आते हैं, पापा ने आवेदन कर रखा है.''

''खैर, अब वीकेंड पर हम सभी बच्चे एक टांग की दौड़ रखेंगे, उस में तुम भी भाग ले सकोगे.''

''मेरे कारण आप सब अपने खेल का मजा क्यों किरकिरा करते हो? मैं तो आप सब को देख कर खुश हो जाऊंगा.''

''नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है, मैं अपने दोस्तों से तुम्हारा परिचय करवाता हूं,'' रोहन से सब बच्चों का परिचय होने के बाद अगली दौड़ के गिफ्ट के लिए बच्चों ने पैसे इकट्ठे कर लिए, रोहन ने भी अपनी जेब से पैसे निकाल कर दिए.

रोहन खुशीखुशी घर चला आया और उस ने अपने पापा को सबकुछ बताया.

मां ने कहा, ‘‘अच्छा, यह तो बहुत अच्छी बात है, क्या नाम है, तुम्हारे दोस्तों का?’’

‘‘मां, हम 10 बच्चे हैं, उन में से एक सोहन है, उन सब से मिल कर मेरा अकेलापन दूर हो गया.’’

‘‘हां बेटा, इसी को दोस्ती कहते हैं,’’ मां ने समझाया.

अगले सप्ताह रोहन निश्चित समय पर पार्क पहुंच गया. उसे देख कर सब को अच्छा लगा. सुमित सब का जज था.

जज का मौका भी सब बच्चों को बारीबारी मिलता था.

एक निश्चित समय पर दौड़ शुरू हुई. सब को बड़ा आश्चर्य हुआ कि विनर रोहन ही था, सब ने रोहन के लिए तालियां बजाईं. सब रोहन के गले मिले. वह गिफ्ट जो विनर के लिए था, रोहन को मिला.

रोहन ने वह गिफ्ट सब के सामने खोला, शिक्षाप्रद बुक देख कर रोहन बहुत खुश हुआ, उस की आंखें नम हो गईं, इतने अच्छे दोस्त पा कर रोहन ने कहा, ‘‘दोस्ती, प्यार, अपनापन, एक दूसरे का दुख समझना, एक अच्छी दोस्ती की पहचान है. यह मैं ने आप सब से सीखा, इस से पहले मैं अपराधबोध का जीवन जी रहा था.’’

सोहन हंसते हुए बोला, ‘‘रोहन यह कुछ ज्यादा तारीफ नहीं हो गई,’’ यह सुन कर सब हंस पड़े.

‘‘चलो, अगले वीकेंड पर आना मत भूलना,’’ सोहन ने उसे याद दिलाया.

‘‘अरे, मैं तुम सब को कैसे भूल सकता हूं, जिन्होंने मुझे इतना सपोर्ट किया, लेकिन एक बात है अगले शनिवार को मेरा जन्मदिन है,’’ रोहन ने घोषणा की.

‘‘तो क्या हुआ? क्या तुम हमें अपने जन्मदिन पर नहीं बुलाओगे?’’ सब ने एकसाथ कहा.

‘‘ऐसी बात नहीं, मैं भी अपने मम्मीपापा से आप सब को मिलवाना चाहता हूं.’’

‘‘तो उस में क्या परेशानी है, दिन में अपनी दौड़ प्रतियोगिता होगी, शाम को बर्थडे सैलिब्रेट करेंगे.’’

‘‘ठीक है, लेकिन मैं कुछ कहना चाहता हूं?’’ रोहन ने कहा.

‘‘क्या कहना चाहते हो?’’ सोहन ने पूछा.

‘‘आप सब दौड़िए, मैं आप सब को देख कर खुशी महसूस करूंगा, मैं ने दोस्ती की है और उसी में मेरी खुशी भी है,’’ रोहन ने कहा.

‘‘ठीक है...दोस्त, तुम टैंशन मत लो, लेकिन हम सब के लिए जज तो बन जाओगे.’’

‘‘हां, हां, यह ठीक रहेगा,’’ रोहन ने खुशी से उत्तर दिया और वे सभी सहमत हो गए.

रोहन अपने हाथ पर बंधी घड़ी को देखते हुए बोला, ‘‘अच्छा दोस्तो, मैं चलता हूं, मेरी, मां चिंता कर रही होंगी.’’

‘‘ओके रोहन, सी यू सैटर डे, लेकिन हां, यह आपआप कहना छोड़ दे, दोस्ती में आप की क्या जरूरत, यार?’’ सोहन ने कहा.

‘‘ठीक है दोस्तो,’’ रोहन ने जवाब दिया और चला गया.

‘‘बेटा, आज बहुत देर कर दी,’’ घर आने पर मां ने कहा.

आज दौड़ प्रतियोगिता थी. ‘‘मां, देखो मैं विनर रहा,’’ अपना गिफ्ट दिखाते हुए रोहन ने कहा.

मां ने बेटे का माथा चूम लिया.

‘‘मां, क्या दोस्त इतने अच्छे भी हो सकते हैं?’’ रोहन ने पूछा.

‘‘हां बेटा, दोस्त की कोई परिभाषा हो ही नहीं सकती, मित्र, दोस्त, फ्रेंड किसी भी नाम से पुकारो. दोस्ती वही है, बेटा, जिस में न कोई स्वार्थ न छलकपट बल्कि आत्मीयता होती है.’’ उस की मां ने समझाया.

‘‘बेटा, दोस्त हमारे दुखदर्द को दूर करने में सक्षम तो नहीं होते हैं, लेकिन हम उन की उपस्थिति में दर्द को कम महसूस करते हैं,’’ मां ने कहा.

‘‘हां, मां, मैं ने भी यही महसूस किया, उन के साथ होता हूं, तो मुझे लगता है कि मैं उन के जैसा ही हूं, कोई भी महसूस होने ही नहीं देता कि मैं विकलांग हूं,’’ इतना कह रोहन की आंखें भर आईं.

मां ने माथा चूमते हुए कहा, ‘‘आगे से अपने आप को विकलांग मत कहना, बेटा.’’

अगले वीकेंड पर दौड़ के बाद सब बच्चे जन्मदिन मनाने के लिए रोहन के घर आए.

रोहन के पापा खुशीखुशी केक ले कर घर पहुंचे और उन्होंने सब को खुशखबरी भी सुनाई कि आवेदनपत्र मंजूर हो गया है, जिस का हमें महीनों से इंतजार था. सब की खुशी का ठिकाना नहीं था. सब ने तालियां बजा कर खुशी जाहिर की.

मां ने कहा, ‘‘अब हमारा रोहन भी सब के साथ कदम से कदम मिला कर चलेगा.’’

इस खुशी में सब ने मिल कर नाचगा कर अच्छे से रोहन का जन्मदिन मनाया.

रोहन ने कहा, ‘‘जन्मदिन तो हर साल आता है दोस्तो, लेकिन इस बार जन्मदिन मेरे लिए खास है. एक तो पापा ने अच्छी खबर दी और दूसरा, आप जैसे दोस्त पा कर मैं अपना दुख भूल गया,’’ रोहन ने कहा. ●

चीकू

चित्रकथा : दास

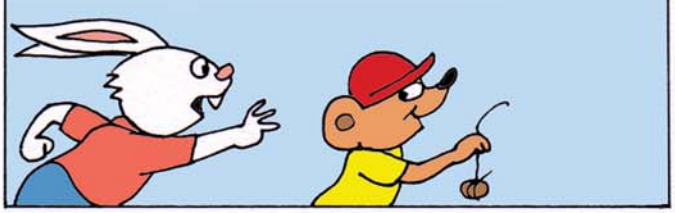

एक सांड़ सड़क पर सो रहा था.
उस सांड़ ने रास्ता रोक रखा है और हरेक के लिए काफी परेशानी भी पैदा कर रहा है.

हमें उसे सबक सिखाना चाहिए.

मीकू ने रस्सी से एक पत्थर को बांधा और इसे सांड़ की पूंछ के चारों ओर लपेट दिया.

मीकू, तुम्हारी शरारत समस्याएं खड़ी करने जा रही हैं. तुम हमेशा ऐसा क्यों करते हो?

चिंता मत करो. कुछ भी नहीं होगा.

मक्खियां सो रहे सांड़ को परेशान कर रही थीं जिन्हें भगाने के लिए सांड़ अपनी पूंछ का इस्तेमाल कर रहा था.
उफ्फ, ये मक्खियां मुझे अकेले नहीं रहने देंगी.

जैसे ही सांड़ अपनी पूंछ हिलाता, रस्सी से बंधा पत्थर उसे चोट पहुंचाता.
मेरी पूंछ से किस ने इस पत्थर को बांध दिया.

मीकू, हमें यहां से भाग लेना चाहिए इस से पहले कि सांड़ हमें ढूंढ़ ले और तुम्हें पकड़ ले.
चलो, हम छिप जाते हैं और देखते हैं कि आगे क्या होता है.

सांड़ ने अपना पारा खो दिया.
यह सब किस ने किया?

जब आसपास के जानवरों ने सांड़ को गुस्से में देखा तो सभी भागने लगे.

एक बकरी कौर्नर पर ठंडा पानी बेच रही थी.

सभी भाग क्यों रहे हैं? ऐसे में मुझ से पानी कौन खरीदेगा.

ठंडा पानी

मुझे चाहिए कि थोड़ा ठंडा पानी सांड़ को ले जा कर दूं, ताकि वह ठंडा हो सके.

बकरी ठंडा पानी सांड़ के पास ले कर गई.

हर कोई भाग गया है. आप को भी ठंडा हो जाना चाहिए.

अच्छा, तो ये तुम ही हो और इसीलिए तुम मुझे ठंडा पानी दे रही हो ताकि मैं ठंडा हो जाऊं.

नहीं, नहीं, मैं नहीं.

यह सांड़ तो बकरी को मार डालेगा. हमें उसे बचाना चाहिए.

रुको, बकरी ने ऐसा कुछ नहीं किया. वह तो सिर्फ पानी बेच रही है.

और यह तो सिर्फ एक छोटा सा पत्थर है. ऐसा हो नहीं सकता कि इस से तुम्हें चोट लग जाए.

ओह, तो इस का मतलब यह तुम हो?

तुम कहां भागोगे? मैं तुम पर चढ़ने जा रहा हूं.

ये मैं ने अभी क्या कबूल कर लिया? भागो.

मैं ने तुम से कहा था कि एक छोटी सी शरारत एक बड़ी समस्या बन सकती है.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

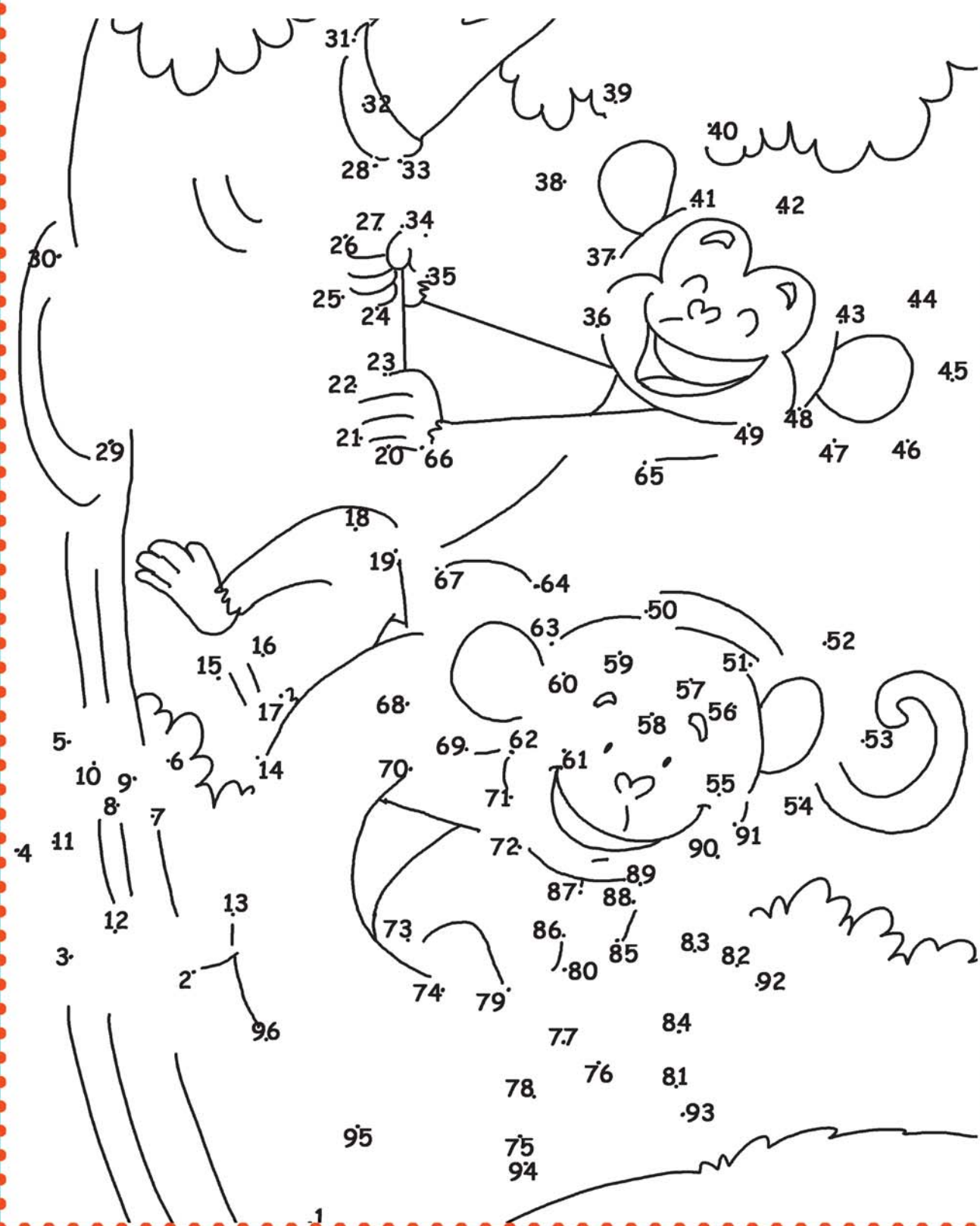

मिल गया खजाना

कहानी ● इंद्रजीत कौशिक

गिन्नी ने जैसे ही मोबाइल पर यह समाचार पढा, वह खुशी से उछल पड़ी.

''चुन्नू यहां आ, देख इस में क्या है.''

''जंगल में खजाना? इस का मतलब है कि ढेर सारे पैसे और हीरेमोती. खबर तो बड़ी मजेदार है, पर यह खजाना कौन से जंगल में गड़ा हुआ है?'' चुन्नू ने मोबाइल पर झटपट खबर पढ़ ली.

खजाने की बात सुन कर पास बैठी पिन्नी के भी कान खड़े हो गए. ''खजाना मिल जाए तो मुझे भूल मत जाना तुम दोनों,'' उस ने सोफे पर लेटेलेटे ही कहा.

''ओह, ये बच्चे हैं या आफत की पुड़िया. जब देखो तब तीनों के तीनों मोबाइल में घुसे रहते हैं. पता नहीं इन्हें कब अकल आएगी?'' तभी कमरे में तीनों को मां ने आ कर कहा.

''मां, आप भी न हरदम बस हमें डांटती ही रहती हो,'' तीनों ने मुंह बनाया.

''मैं डांटूं नहीं तो क्या करूं? पढ़ाईलिखाई तो तुम करते नहीं, बस हरदम मोबाइल से चिपके रहते हो. देखो, पड़ेपड़े तुम तीनों कितने मोटे हो गए हो.''

''प्यारी मां, नाराज मत होना, आप तो कहती हो कि गुस्सा करना सेहत के लिए अच्छा नहीं होता,'' तीनों

उस के साथ खजाने की तलाश में घर से निकल पड़े.

दोपहर का समय था, बहुत तेज गरमी पड़ रही थी. घने जंगल में गरमी तो कम थी पर हमेशा कूलर चला कर रहने वाले बच्चों को वहां भी पसीना आ रहा था.

खजाना मिलने का लालच ही उन्हें वहां तक खींच लाया था वरना वे तो पानी का गिलास भी न भरते. शाम होने वाली थी और खजाने का कहीं अतापता तक नहीं था.

'घर पर मांपापा इंतजार कर रहे होंगे,' यह सोच कर के तीनों वापस लौट गए. थकान काफी हो चुकी थी, इसलिए खाना खा कर तीनों सो गए.

अगले दिन फिर से तीनों सुबह जल्दी ही घर से खजाने की खोज में निकल पड़े. मोबाइल पर एक उल्टासीधा नक्शा भी दिया गया था. उसी के सहारे वे बड़े घने जंगल में खजाना ढूंढ़ने लगे.

बच्चों ने इतनी मासूमियत से कहा कि खीज से भरी मां को हंसी आ गई.

तभी कुकर की सीटी बजी तो मां किचन में चली गईं. ''चलो, चल कर खजाने की तलाश करें. एक बार बस हमें यह खजाना मिल जाए फिर तो हम ठाठ से अपनाअपना मोबाइल ले कर बड़े मजे से देखा करेंगे,'' गिन्नी ने कहा.

''इतनी गरमी में कौन जाए वहां तक, क्या जादू के बल खजाना खुद चल कर हमारे पास नहीं आ सकता?'' चुन्नू बोला.

''बुद्धू, जल्दी चल वरना कोई दूसरा खजाने पर हाथ साफ कर जाएगा और हम यहां आलसियों की तरह पड़े रह जाएंगे,'' पिन्नी ने कहा तो दोनों भी

अब तो यह उन का रोज का रूटीन बन गया. देर तक सोए रहने वाले तीनों बच्चे अब जल्दी जग जाते और फटाफट तैयार हो कर खजाने की तलाश में घर से निकल जाते.

''क्या बात है बच्चो, आजकल तुम तीनों पहले की तरह ढीलेढाले और आलसी नहीं रहे. जो भी काम करने को कहती हूं, झट से कर डालते हो. यहां तक कि तुम्हें अब पढ़ाईलिखाई के लिए भी कहना नहीं पड़ता,'' मां को तीनों के बदलेबदले रूप को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ.

''कुछ नहीं मां, बस यों ही, सोचा कि आप को हम ने बहुत तंग कर लिया है इसलिए अब हम सुधर गए हैं,'' सब से छोटा चुन्नू बोला. उस की बात सुन कर गिन्नी और पिन्नी दबीदबी हंसी हंस रही थी.

मां समझ गईं कि कुछ न कुछ तो गड़बड़ है. तीनों के तीनों उस से कुछ बात छिपा रहे हैं. असलियत मालूम करने के लिए एक दिन जब तीनों सुबह घर से निकल रहे थे तो मां भी उन के पीछे हो लीं.

‘‘तो यह बात है, तीनों बदमाश यहां खजाना खोज रहे हैं,’’ हकीकत का पता चलते ही मां मुसकरा दीं.

‘‘मां, आप? और यहां? आप कब आईं? क्या आप भी हमारी तरह खजाना ढूंढ़ने निकली हैं?’’ अचानक अपने सामने मां को पा कर तीनों हक्केबक्के रह गए.

‘‘मुझे कोई खजानावजाना नहीं चाहिए. मेरा खजाना तो तुम तीनों हो, जो दुनिया में सब से अनमोल खजाना है मेरे लिए,’’ मां ने उत्तर दिया.

‘‘पर मां, मोबाइल के मैसेज में तो लिखा था कि जंगल में खजाना है, पर फिर वह हमें क्यों मिला?’’ भोलेपन से पूछा गया उन का सवाल मां को गुदगुदा गया.

‘‘पर मुझे तो लगता है कि तुम्हें वह खजाना मिल चुका है,’’ मां बोलीं.

‘‘खजाना? कहां है खजाना? हमें तो नहीं मिला.’’ मां की बात सुन कर तीनों चौंके.

‘‘वह खजाना है, तुम्हारी सेहत का खजाना. अब तक आलसी और ढीलेढाले बन कर जीवन बिता रहे थे. जब से तुम्हें खजाने की लगन लगी है तब से तुम सेहतमंद हो गए हो. घने जंगल में सवेरे की ताजी हवा खा कर तुम्हारा तनमन निखर आया है,’’ मां ने भेद खोला तो तीनों के मुंह खुले के खुले रह गए.

कुछ ही देर बाद तीनों बच्चे अपनी मां का हाथ थामे खुशीखुशी वापस घर लौट रहे थे. ●

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

कौन सा कुत्ता किस का

दोस्तों का एक समूह अपने कुत्तों को टहला रहा था, जिन की रस्सियां आपस में उलझ गईं. पता करें कि कौन सा कुत्ता किस का है.

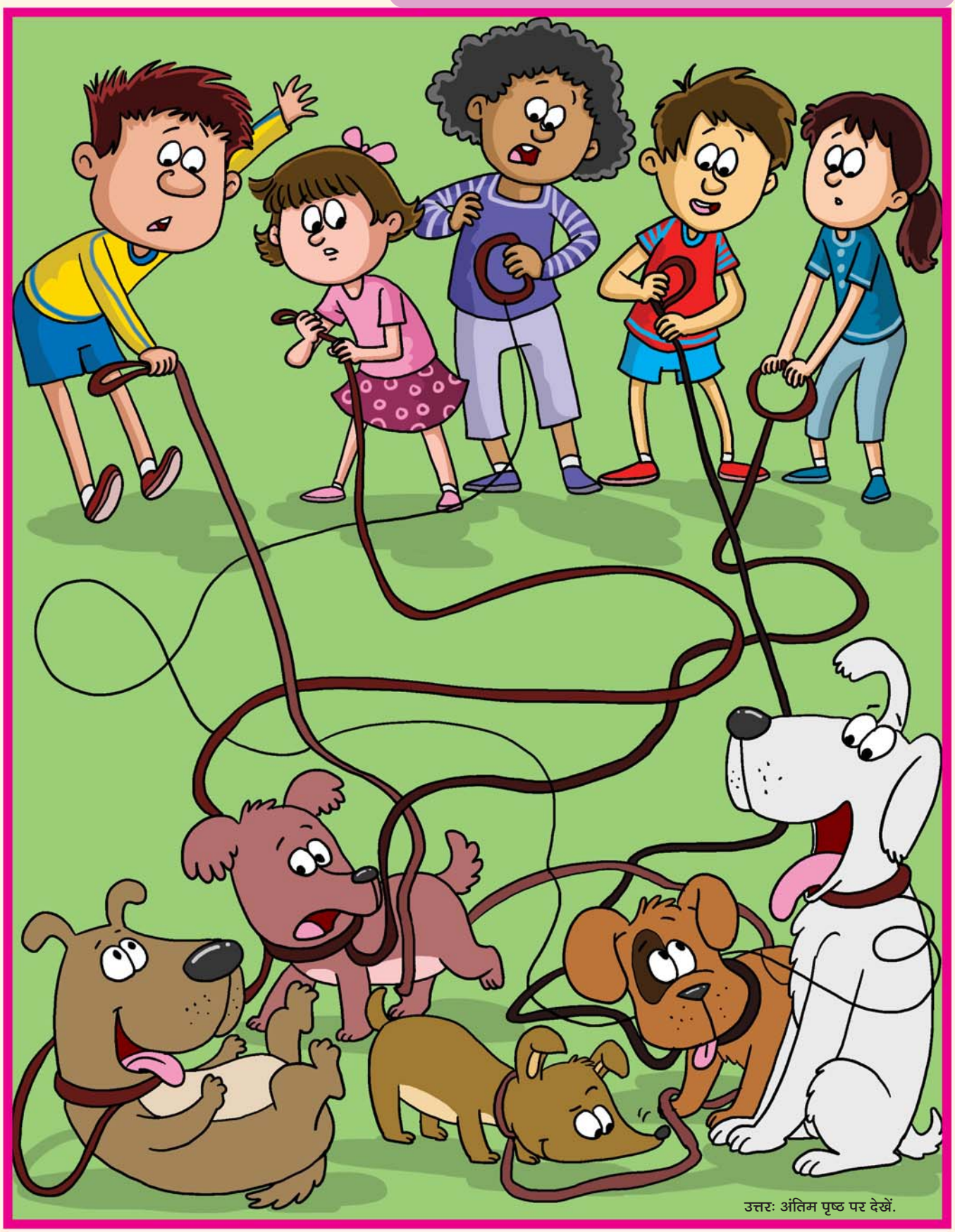

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

सूरजमुखी का फूल

देविका मेनन

स्मार्ट

20 मई को विश्व मक्खी दिवस है. सूरजमुखी के फूलों में मकरंद यानी नैक्टर जोकि मधुमक्खियों का भोजन है, बहुत अधिक होता है. सूरजमुखी का फूल चार्टपेपर का इस्तेमाल करते हुए बनाएं.

आप को चाहिए : हरा और पीला चार्टपेपर, स्केच पैन ग्लू, कैंची और पैंसिल.

ऐसे बनाएं :

1. पीले चार्ट पेपर पर दो अलग तरह के सूरजमुखी के पैटर्न खींचें, एक छोटे आकार का और दूसरा बड़े आकार का.

2. उन्हें कैंची से आराम से काट लें.

3. हरेक दल यानी पंखड़ी पर एक क्रीज बना लें जैसा कि चित्र में दिखाया गया है.

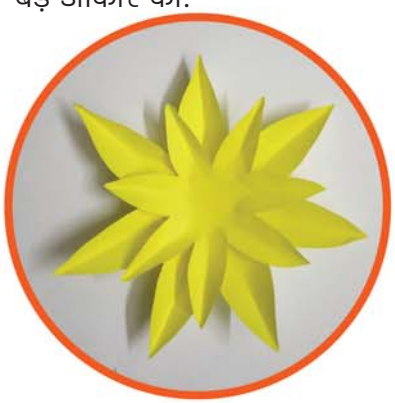

4. ग्लू का इस्तेमाल करते हुए छोटे फूल को बड़े फूल के बीच में चिपका दें.

5. भूरे स्कैच पैन का इस्तेमाल करते हुए सूरजमुखी के केंद्र में एक बिंदु खींच लें और इसे एक बड़े वृत्त जैसा कर लें.

6. हरे चार्ट पेपर पर पत्तियां खींच लें और इन्हें काट लें.

7. हरेक पत्ती पर एक क्रीज बना लें.

8. सूरजमुखी पर पत्तियों को चिपका दें.

सूरजमुखी अब बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि **writetochampak@delhipress.in** या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

काला भूत

कहानी ● मुरली टीवी

''ऐसा लगता है, गर्मियों की शुरुआत हो चुकी है,'' इंदु खरगोश ने बीना बुलबुल से कहा.

''आजकल मौसम अनिश्चित है. मनुष्य ने जंगलों, झीलों, नदियों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को बरबाद कर दिया है और हम अपनी इन्हीं गलतियों का खमियाजा भुगत रहे हैं,'' बीना ने कहा.

वे लंच करने के बाद आराम कर रहे थे. पूरी तरह खिलने वाले गुलमोहर के पेड़ के छाते के आकार वाला मुकुट यानी छत्रक उन्हें छाया प्रदान कर रहा था. इस छाया में इंदु और बीना सोने ही वाले थे कि तभी उन्होंने अपने नजदीक भारी कदमों की आवाज सुनी.

''ओह, क्या हुआ?'' इंदु ने ऐंबी हाथी से पूछा.

''अरे, यह बातचीत करने का समय नहीं है. हमारे पीछे आओ,'' ऐंबी, गोगो जिराफ के साथ पहुंचा.

''वह तनाव में लग रहा था,'' बीना ने कहा.

अचानक छाया कोयल यह कहते हुए वहां आई, ''क्या तुम नहीं जानते हो, शालिन भेड़ की बेटी शीना अपने कमरे से बाहर नहीं आ रही है?''

''चलो, हम उन के साथ चलते हैं,'' बीना ने कहा. इस के बाद इंदु, बीना और छाया भी ऐंबी और गोगो के साथ हो लिए.

''मुझे तो जरा भी विश्वास नहीं हो रहा है,'' इंदु ने कहा, ''शीना को तो पहाड़ी और घास के मैदान में खेलने का बहुत शौक है.''

''यह बात बिलकुल सही है. वह बहुत ही सक्रिय रहती है,'' बीना ने सहमति जताई.

''हम में से कोई भी नहीं समझ पा रहा है कि उस के साथ क्या हुआ,'' ऐंबी ने कहा. ''शीना को अपने घर

से निकले हुए लगभग एक सप्ताह हो चुका है. आज शालिन तब भागने लगी जब शीना ने अपने कमरे में चिल्लाना शुरू कर दिया था.''

जब तक वे शालिन के घर पहुंचे, तब तक वहां अच्छीखासी भीड़ पहले ही जमा हो चुकी थी. शालिन ने अपने आंसू पोंछे लेकिन उस का रोना जारी था. ''मुझे नहीं पता कि शीना के साथ क्या हुआ है. वह दिन में भी मुझे खिड़कियां नहीं खोलने देती है और अंधेरे में रहने को ही तवज्जो देती है. खैर कुछ भी हो, मैं अभी सिर्फ डाक्टर चंपा गिरगिट का इंतजार कर रही हूं.''

''डाक्टर चंपा गिरगिट शीना को ठीक कर देगी, मुझे इस का पूरा भरोसा है,'' गोगो ने दृढ़ता से कहा, डाक्टर चंपा चमचम वन में मशहूर थी.

तभी बीना बुलबुल उड़ी और उस ने एग्जौस्ट फैन के छेद से झांक कर शीना के कमरे में देखा. ''शीना सो रही है,'' उस ने बताया.

''चलो, उसे शांति से सोने दो,'' इंदु ने कहा. सभी शांत हो गए और डाक्टर चंपा का इंतजार करने, जो तुरंत पहुंच गई.

शालिन अपनी व्यथा डाक्टर चंपा का विस्तार से बताने लगी तो वह अपने आंसुओं पर नियंत्रण नहीं कर पाई.

''कृपया रोइए मत. मुझे शीना से बात करने दीजिए,'' चंपा ने कहा.

''मां, मुझे भूख लगी है,'' अचानक शीना अपने कमरे से बिलखते हुए बोली.

''ओह, वह जागी हुई है,'' शालिन ने कहा.

''उसे आज मैं खाना खिलाऊंगी,'' चंपा ने कहा, ''आप सभी मेरे साथ आ सकते हैं,'' उस के बाद चंपा ने दरवाजा खोला, उत्सुकता से शीना को देखा और मुसकराई, ''हैलो, प्यारी सी गुड़िया, तुम कैसी हो?''

हैरान शीना ने सभी को देखा. चंपा ने शीना को थपथपाया और कहा, ''सब से पहले खाना खाओ.'' अपने दोस्तों को देख कर शीना खुश दिखने लगी थी और मुसकरा कर उस ने खाना खाया.

''अरे, मेरी बिटिया मुसकरा रही है,'' शालिन को यह देख कर विश्वास नहीं हो रहा था.

''कमरे के अंदर बदबू फैली है,'' इंदु ने खिड़की को खोलते हुए कहा. तभी अचानक शीना का मूड बदल गया.

''खिड़की बंद करो. काला भूत अंदर घुस आएगा,'' शीना चीखते हुए बोली और ऐंबी हाथी के पीछे छिप गई.

''भूत, हमें भागना चाहिए,'' गोगो चीखने लगा. ऐंबी डर से चिंघाड़ने लगा. इंदु, बीना, छाया और शालिन ऐंबी के साथ सट कर खड़े हो गए. वे सब के सब उत्सुकता से चंपा के चेहरे को देखने लगे.

वह मुसकरा कर बोली, ‘‘पहली बार किसी भूत से मिलने का यह सुनहरा अवसर मिला है.’’

‘‘मुझे बताओ, काला भूत दिखने में कैसा लगता है?’’ चंपा ने शीना से पूछा. उस ने नन्ही शीना को थपथपाया और उसे ताजे हरे कटहल के पत्तों से भरी एक टोकरी दी. ‘‘मुझे काले भूत के बारे में और कुछ बताओ.’’

‘‘वह काला है,’’ शीना ने हिचकिचाते हुए कहा, ‘‘हर समय वह अलगअलग आकार और रंग का हो जाता है. यह मेरे साथ चलते समय सचमुच बहुत ही डरावना है.’’

‘‘क्या इस ने तुम्हें कभी नुकसान पहुंचाया है?’’ चंपा ने पूछा.

‘‘नहीं, लेकिन यह हमेशा मेरा पीछा करता है,’’ शीना ने जवाब दिया. तभी अचानक अप्रत्याशित हवा ने सबकुछ उड़ा दिया. ‘‘ओह, काला भूत आ गया,’’ शीना चीख उठी और अपने बेड के नीचे छिप गई.

इस से पहले कि अन्य सभी भाग पाते, चंपा ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ‘‘चलो, काले भूत से मिलते हैं,’’ चंपा ने नन्ही शीना को बेड के नीचे से खींच कर निकालने के लिए ऐंबी से कहा.

चंपा ने खिड़की और दरवाजे सख्ती से बंद कर दिए, ‘‘अब कमरे में पूरी तरह से अंधेरा हो गया है. मैं सही कह रही हूं न?’’ उस ने पूछा.

‘‘हां,’’ जवाब देने वाली छाया पहली थी.

‘‘क्या तुम काले भूत को कहीं देख सकती हो?’’ चंपा ने शीना से पूछा.

‘‘नहीं,’’ शीना ने तुरंत जवाब दिया.

‘‘अब चलो, बाहर चलते हैं और गरम धूप का मजा लेते हैं,’’ चंपा ने शीना के प्रतिवाद करने से पहले उस के साथ तुरंत कमरे से बाहर निकलते हुए कहा. उन के पीछेपीछे अन्य सभी बाहर आ गए.

शीना चिल्लाने लगी, ‘‘अरे, आज इतने सारे काले भूत हैं,’’ उस ने काले भूतों की ओर इशारा किया. चंपा ने मुसकराते हुए अन्य सभी को गुप्त रूप से आंखें मटका कर बताया कि वे भी शीना के साथ डरने का अभिनय करें. उस का साथ निभाएं.

‘‘ओह, ऐसा लगता है कि तुम्हारा काला भूत आज अन्य सभी भूतों के साथ यहां आ गया है,’’ चंपा ने डरने की ऐक्टिंग करते हुए कहा.

शीना चंपा के बिलकुल पास आ गई. ‘‘यह हमारे साथ चलेगा. यह अपने आकार को बदलेगा और हमारे हिलनेडुलने की कौपी करेगा. यह बहुत ही खतरनाक है और आज यह हम सभी को निगल

जाने के लिए टीम के साथ आया है.''

''चलो, अब देखते हैं कि ये काले भूत कैसा बरताव करता है,'' चंपा ने सभी से कूदने को कहा. ऐंबी को छोड़ कर सभी कूदे. शीना चिल्ला उठी, ''देखो, काला भूत कूद रहा है.''

जब ऐंबी ने अपनी सूंड़ हिलाई, तो काला भूत भी अपनी सूंड़ हिलाता हुआ दिखा. जानवर और पक्षी जो कुछ भी करते, काला भूत वैसा ही करता.

अचानक इंदु और बीना ठहाके लगा कर हंसते हुए निकली, ''सौरी, अब हम अपनी हंसी और ज्यादा रोक नहीं सकते,'' गोगो, ऐंबी, छाया और शालिन भी हंसने लगे.

नन्ही शीना फिर से चिल्लाने लगी, ''मेरे चारों ओर बहुत सारे भूत हंस रहे हैं,'' शीना ने भागने की कोशिश की, लेकिन ऐंबी ने उसे तुरंत पकड़ लिया.

चंपा ने मुसकराते हुए शीना से पूछा, ''तुम उस चीज से क्यों डर रही हो, जिस ने तुम्हारा कभी नुकसान नहीं किया?'' शीना अब भी खामोश रही.

''तुम ने कभी भी काले भूत को अंधेरे में नहीं देखा. फिर भी तुम इसे काला भूत कहती हो. क्यों?'' चंपा ने पूछा और शीना चुपचाप उसे टकटकी लगा कर देखती रही.

''यहां आओ, आम के पेड़ के नीचे आराम करते हैं,'' चंपा ने उन सभी से कहा. सभी आम के पेड़ के नीचे बैठ गए.

अचानक शीना मिमियाने लगी, ''मुझे यह छाया पसंद है,'' शीना कूद कर मम्मी के पास गई और बोली, ''यहां पर तो कोई भी काला भूत नहीं है.''

''बेवकूफ मत बनो. एक बड़े से काले भूत ने तो हमें पहले से ही पकड़ रखा है,'' चंपा ने गंभीरता से उत्तर दिया.

''मैं ऐसा नहीं समझती,'' शीना ने प्रतिवाद किया. चंपा ने ऐंबी से कहा कि वह शीना को उठा कर आम के पेड़ से थोड़ी दूरी पर छाया से बाहर खड़ा हो जाए. ऐंबी ने ऐसा ही किया. शीना दिल की गहराई से हंसने लगी जब वह ऐंबी की सूंड़ में झूल रही थी.

ऐंबी जैसे ही पेड़ की छाया से बाहर निकला, शीना चिल्लाने लगी, ''ओह, यहां पर तो दो काले भूत हैं. एक भूत तो दूसरे को शायद खा लेगा.''

''शीना, अब हमें देखो,'' चंपा ने कहा, ''क्या तुम्हें महसूस नहीं हो रहा कि अब हमें एक बड़े से काले भूत ने पकड़ रखा है?''

शीना ने देखा, वह उत्सुक हुई और थोड़ी सी हैरान भी हुई और बोली, ''अरे, यह तो पेड़ की छाया है.''

''ऐंबी, शीना को तुम अपनी दाईं तरफ रखो और अपनी सूंड़ लहराओ,'' चंपा ने कहा. ऐंबी ने वैसा ही किया. ''अब सावधानी से काले भूत को देखो,'' चंपा ने शीना से कहा, जो डरते हुए दो काले भूतों को देख रही थी.

''अपनी दिशा को बदलो, ऐंबी,'' चंपा ने कहा. ऐंबी

ने अपनी दिशा बदली और बहुत से मजेदार ऐक्शन अपनी सूंड़ में शीना को थामे हुए किए. शीना ने काले भूत को देखा. इस बार शीना नहीं चिल्लाई, क्योंकि उस ने ऐंबी ने सूंड़ में खुद को सुरक्षित महसूस किया.

काले भूत ने अपने आकार और रंग को बदला. जब भी ऐंबी ने अपनी दिशा बदली शीना ने ऐंबी को बताया. आखिर में शीना और ऐंबी अन्य सभी के पास आ गए.

''ओके, शीना, तुम ने क्या देखा?'' चंपा ने पूछा. तभी शालिन ने नारियल पानी सभी को परोसा और इंदु ने सभी को फल दिए.

शीना ने अपना नारियल पानी पीया और जवाब दिया, ''मैं महसूस कर रही हूं कि काले भूत ने हमें फिर से इकट्ठा कर दिया यानी एकदूसरे के सामने कर दिया है. कभी ऐंबी की तरह तो कभी गोगो और कभी,'' हर कोई शीना के कथन को मुसकराहट के साथ सुनते रहे.

''साथ ही रंग और आकार भी बदलते रहे,'' शीना ने दृढ़ता के साथ अपना कथन समाप्त किया, ''खास कर तब जब मैं ऐंबी की सूंड़ में झूल रही थी,'' ऐंबी खुशी से चिल्लाने लगा.

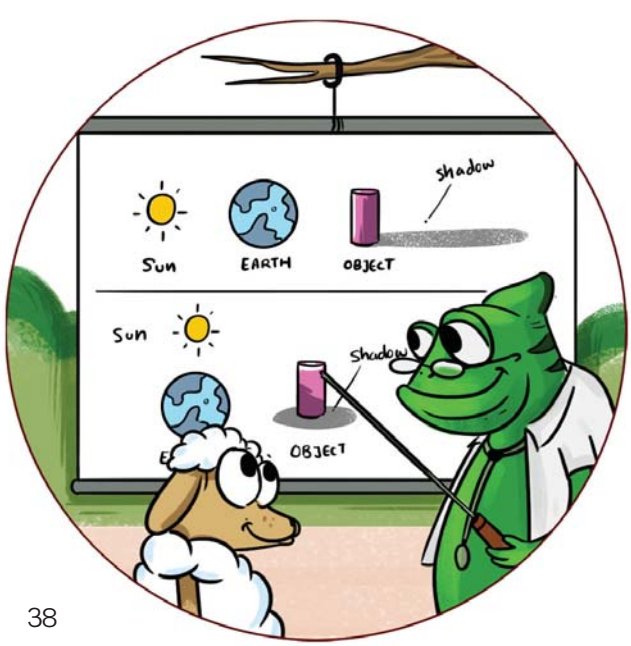

''कृपया समझें कि कोई काला भूत नहीं है. आप ने जो कुछ भी देखा, वह और कुछ नहीं, सिर्फ आप की छाया है. आप बेमतलब अपनी या अन्य किसी की छाया से डरते रहे हैं,'' चंपा ने विस्तार से बताया.

''छाया?'' नन्ही शीना ने अविश्वास के साथ कहा. शालिन ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''ओह, मुझे विश्वास ही नहीं होता कि शीना छाया से डरी हुई थी.''

छाया ने कहा, ''ऊपर वाले का धन्यवाद, एक पल के लिए तो मैं ने भी शीना की वजह से काले भूत पर विश्वास करना शुरू कर दिया था.''

''परेशान मत हो, शीना,'' चंपा ने शीना को गले लगाते हुए कहा, ''एक चमकदार सतह पर एक काला यानी अंधेरा हिस्सा है. यह किसी चीज से जो लाइट को रोकती है, की वजह से बनता है.''

''रुकने से?'' शीना ने उत्सुकता जाहिर कर पूछा.

''हां, तुम्हारा शरीर सूरज की रोशनी को रोकता है और तब तुम्हारी आंखों के आगे तुम्हारी छाया बनती है. इसी तरह से जब भी कोई वस्तु प्रकाश को रोकती है, इस की छाया प्रकट हो जाती है,'' चंपा ने विस्तार से बताया.

''एक छाया की आउटलाइन को सीलहाउट या सिल्हूट यानी छाया आकृति कहा जाता है. इस का आकार बिलकुल वैसा ही होता है जैसी वस्तु छाया को रोकती है. प्रकाश के स्रोत या संसाधनों पर छाया की एक बड़ी शृंखला निर्भर करती है और उत्पन्न हो सकती है.''

''मैं छाया के बारे में जानता तो था, लेकिन इन बातों को कभी नहीं जानता था,'' गोगो ने कहा.

''क्या तुम छाया पर कुछ प्रकाश डाल सकती हो?'' बीना ने मजाकिया लहजे में पूछा.

''छाया पर प्रकाश डालना, ओह,'' ऐंबी ने अपनी तोंद को हिलाया. अचानक सभी जोर से हंसने लगे.

''क्यों नहीं? मैं छाया पर कुछ प्रकाश डालूंगी,'' चंपा ने भी हंसते हुए कहा.

''एक सिंगल लाइट का स्रोत एक सामान्य सी छाया बनाएगा जिसे उम्ब्रा यानी छाया कहते हैं. एक पेनउम्ब्रा छाया का एक हिस्सा है, जहां प्रकाश का स्रोत आंशिक रूप से रुकता है. अगर प्रकाश के बहुत सारे स्रोत हैं तो वहां कई सारी छाया बनेंगी.''

''मैं समझता हूं कि ऐसा ही ग्रहणों के साथ भी होता है यानी ग्रहणों के साथ भी कुछ ऐसा ही लेनादेना है,'' इंदु ने सुझाव दिया.

''हां, तुम सही कह रही हो,'' बीना ने अचानक हस्तक्षेप करते हुए कहा. ''ग्रहण एक ग्रह के सूर्य के सामने आने और उस की रोशनी रोकने से होता है. पृथ्वी द्वारा रोकी गई रोशनी से चंद्रग्रहण लगता है. चांद द्वारा पृथ्वी पर डाली गई छाया से सूर्यग्रहण लगता है.''

''बहुत बढ़िया,'' चंपा ने उस की सराहना की.

''लेकिन काला भूत अपने आकार को कैसे बदलता है?'' शीना ने पूछा और इस से पहले कि कोई कुछ बोलता, उस ने खुद को सुधारा, ''मेरे कहने का मतलब छाया से है.''

''वह एक अच्छी लड़की है,'' चंपा ने उस की सराहना की. ''जब सूरज क्षितिज के पास होता है, तो छाया बहुत लंबी हो सकती है, जिसे सूर्योदय और सूर्यास्त के समय देख सकते हैं. अगर सूरज सीधे हमारे सिर के ऊपर होगा, तो छाया वस्तु के नीचे बनेगी और छोटी होगी. छाया की लंबाई सूरज की रोशनी की क्षितिज से ऊंचाई पर निर्भर करेगी.''

''अरे, तुम्हें यह सब मुझे पहले ही बताना चाहिए था,'' शीना ने राहत की लंबी सांस ली.

''आखिरकार, अब मुझे काले भूत से डरने की चिंता नहीं करनी चाहिए.''

''याद रखना, कोई भी वस्तु चाहे वह जिंदा हो या मृत, जो भी प्रकाश को रोकेगा, छाया का निर्माण करेगा,'' चंपा ने कहा.

''मैं एक बहादुर लड़की हूं,'' अचानक शीना कूदी और अपनी मां की तरफ दौड़ कर भागी. ''मैं धूप में खेलने जा रही हूं,'' शीना जोर से मिमियाते हुए बोली.

''मत जाओ, काला भूत वहां तुम्हारा इंतजार कर रहा है,'' ऐंबी ने उसे चिढ़ाया.

''काले भूत ने अब तक मेरे साथ खूब मजे लिए, मेरा मजाक उड़ाया, इसलिए अब मैं अपने काले भूत का मजाक उड़ाऊंगी, क्योंकि मैं जानती हूं कि यह मेरी छाया है,'' शीना ने अपनी छाया के साथ खेलना शुरू कर दिया. वह दौड़ने, कूदने, नाचने और लुढ़कने लगी.

शालिन ने चंपा को धन्यवाद दिया. इंदु, बीना, गोगो, ऐंबी और छाया काले भूतों के साथ खेल में शामिल हो गए और अपनीअपनी छाया के साथ खेलते हुए खुशी मनाने लगे. ●

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारा और उन का सामाजिक बंधन

फुज्जी गिलहरी इनसानों से बिलकुल भी नहीं मिलती. लेकिन एक खासियत है जिसे हम उन के साथ साझा करते हैं, जैसे कि वे उतना ही ज्यादा सोचते हैं जितना कि हम निर्णय लेने से पहले सोचा करते हैं.

हाल ही में वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि गिलहरियां रैंडम यानी यादृच्छिक यानी बिना सोचे समझे निर्णय नहीं लिया करती हैं. वे अपने निवेश के बारे में विचारशील होती हैं. इस मामले में निवेश से मतलब इन के नट्स या गिरियों के भंडारण से संबंधित है. गिलहरियां नट्स को इकट्ठा करती हैं और उन्हें भविष्य के लिए छिपा देती हैं. यहां तक कि जब वे भूखी नहीं होती हैं, वे भोजन को प्रोत्साहन के रूप में ग्रहण करती हैं और उन्हें उन जगहों पर जमा कर देती हैं जिन जगहों को वे याद करती हैं.

नट्स उन का मुख्य आहार हैं, फिर भी वे इस के बारे में किसी अन्य गिलहरी को बताने की कोशिश नहीं करती हैं और इस तरह से वे व्यक्तिगत तौर पर काम करती हैं. अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि गिलहरियों के भोजन का 25 प्रतिशत चोरी हो जाता है. इसीलिए वे हमारी तरह सामाजिक बंधन बनाना पसंद नहीं करती हैं.

वे नट्स यानी गिरियों के भंडारण में दूसरी गिलहरियों के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं.

गिलहरी के सामने के दांत हमेशा बढ़ते रहते हैं यानी उन का बढ़ना रुकता नहीं है.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

दादाजी और अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

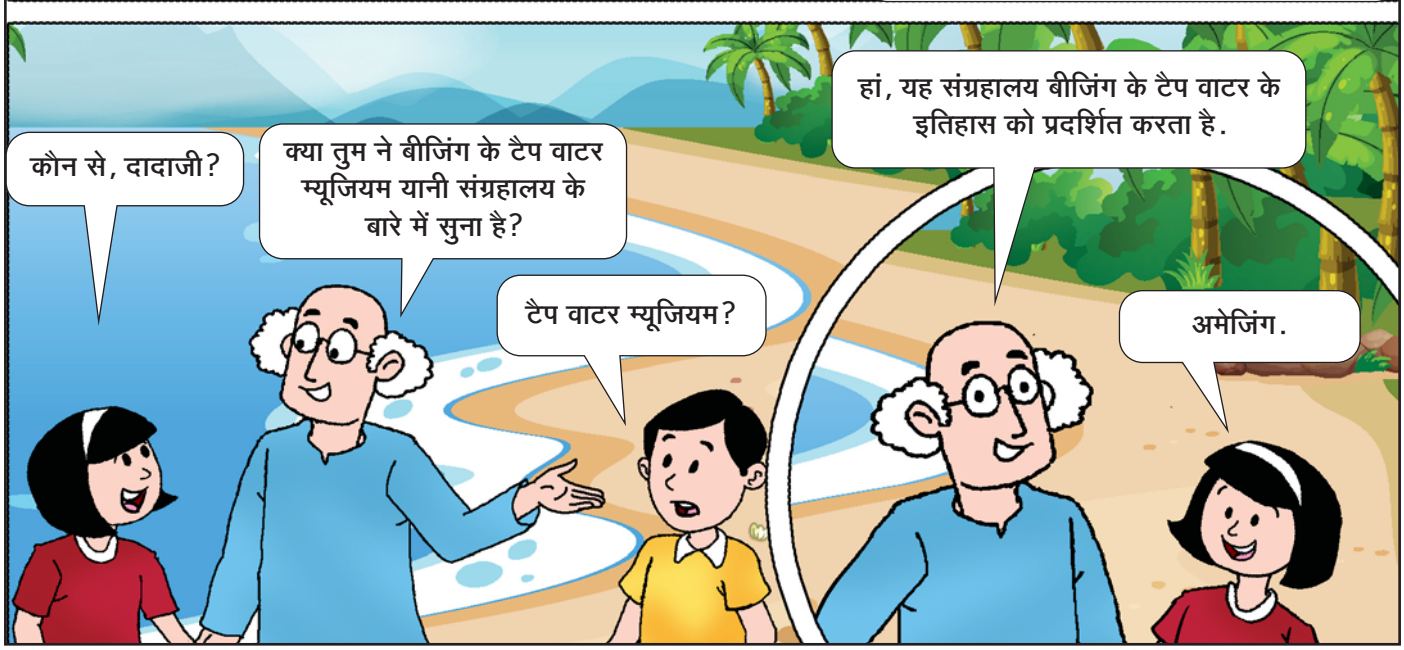

इतना ही नहीं, तुम ने म्यूजियम औफ ऐक्सिलैंट आर्टवर्क के बारे में जरूर सुना होगा, लेकिन क्या तुम ने म्यूजियम औफ बैड आर्ट्स के बारे में सुना है?
क्या कोई संग्रहालय में बैड आर्ट्स रख सकता है?
अमेरिका में एक संग्रहालय यानी म्यूजियम है जिस में बैड आर्ट्स को रखा गया है.
तब तो वहां राहुल के द्वारा बनाई गई पिक्चर्स होनी चाहिए.
जरूर, लेकिन तुम वहां अपनी पिक्चर्स को भेजना भी न भूलना.
वहां पर और भी बहुत से संग्रहालय हैं जिन में ये सभी चीजें देखने को मिलती हैं जैसे कुत्ते के गले के पट्टे और इंगलैंड में घास काटने की मशीन, गुड्डों के संग्रहालय और इसी तरह अन्य बहुत सारे चीजों के म्यूजियम हैं.
अद्भुत, यह विश्वास करना मुश्किल है कि वहां पर ऐसे ढेर सारे म्यूजियम हैं.
दादाजी, जब ऐसे विचित्र किस्म के संग्रहालयों के अस्तित्व मौजूद हैं तो रिया भी अलगअलग किस्म के पत्थरों को जमा कर एक छोटा सा संग्रहालय बना सकती है.
हां, खैर, संग्रहालय का निर्माण यह दिखाने के लिए किया जाता है कि भूतकाल में क्याक्या हुआ था. उस में ढेर सारी जानकारियां होती हैं.
संग्रहालय इतिहास को खराब होने से बचाए रखता है और प्राचीन संस्कृति और समाज में जो कुछ घटा था, उन्हें संजोए रखता है. इसीलिए 18 मई को म्यूजियम डे यानी संग्रहालय दिवस मनाया जाता है ताकि इस के महत्त्व के प्रति जागरूकता को फैलाया जा सके. लोगों में जागृति आ सके.
बिलकुल सही, दादाजी. हम एक म्यूजियम से बहुत कुछ सीख और समझ सकते हैं.
SONAL

नन्ही कलम से

शिकार करना बंद करें

पैंगोलिन को उन के कवच के लिए, हाथियों को उन के दांतों के लिए, मोर को उन के पंखों के लिए, बाघों को उन की खाल और पंजों के लिए, हम सिर्फ और सिर्फ अपनी लालची आवश्यकताओं के लिए पक्षियों और जानवरों को मारते हैं. हम स्वार्थी और लालची मनुष्य उन्हें शांति से जीने नहीं देते हैं. वे हमारा नुकसान किसी भी तरह से नहीं करते, लेकिन हम उन की जिंदगी को हर दिन दयनीय बनाते जा रहे हैं. जब आप कोई भी पशुओं से बनी वस्तु खरीदते हैं, कम से कम दो बार सोचें, ऐसा कर के आप जानवरों की जिंदगी को बचा सकते हैं. उन्हें भी जिंदा रहने का अधिकार है. चलिए, सही तरीके से सोचें, काम करें और उन को शिकार बनाना बंद करें. हम सभी शांति और समरसता की जिंदगी जीएं.

आर. सहाना, 11 वर्ष, चैन्नई

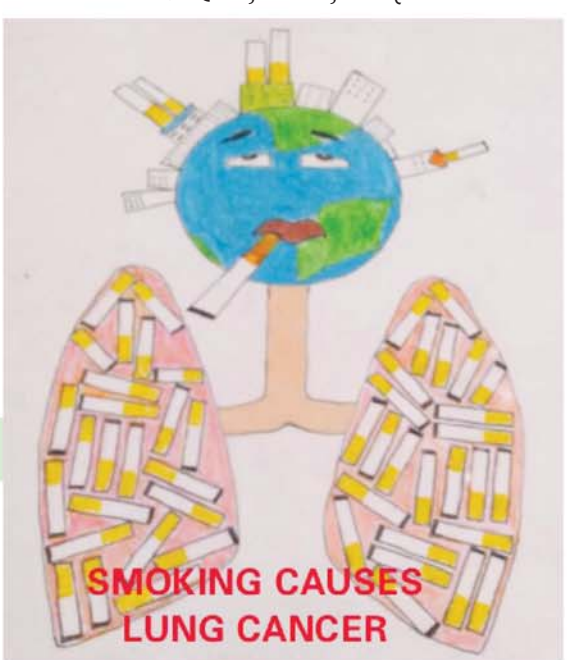

ऐशानि भूयान, 11 वर्ष
मध्य प्रदेश

सुनेहरा अंजुम, 11 वर्ष, कोलकाता

नया विचार, नई संरचना

क्या आप सभी लोगों को पता है कि पहले सभी महान विचारकों के विचार जाते कहां थे? हां, उन में से कुछ डस्टबिन यानी कूड़ेदान में चले जाते थे, क्योंकि लोग उन्हें फिर से देखना नहीं चाहते थे. लेकिन इस से अग्रदूतों यानी विचारकों को नहीं रोका जा सका. वे अपने काम में नेताओं की तरह हमेशा लगे रहे. आइंस्टाइन को स्कूल से निकाल दिया गया था. लेकिन वे सापेक्षता के नियम को लिखने में लगे रहे. जे.के. रौलिंग को कई बार अस्वीकृत किया गया लेकिन इस से उन की भावनाओं को कुछ भी हानि नहीं हुई. वे निराश नहीं हुईं. सर आइजक न्यूटन बहुत ज्यादा प्रसिद्ध नहीं थे. उन का जीवन वास्तव में सुंदर नहीं था, लेकिन उन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत को कभी भी पराजित नहीं किया जा सकता और आज भी सब से बड़ी बात यह कि इसे सम्मान प्राप्त है. मैरी एन्ने इवान का प्रसिद्धि की स्वर्णिम मशाल पाने के लिए शायद ही कभी नाम हो पाता, अगर उस ने अपना उपनाम जौर्ज इलियट न रखा होता. वह एकमात्र महिला थी जिस ने इस उपनाम से लिखा. लेकिन इन सभी लोगों ने कभी भी अपनेआप को हतोत्साहित होने नहीं दिया. उन हारे हुए लोगों से वे कभी भी पराजित नहीं हुए, जो उन्हें कभी पसंद नहीं करते थे, मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन के सामान्य लक्ष्य होते थे कि अपनी जिंदगी को बेहतर ढंग से जियो, जितना कि आप से हो सके. इस के लिए कोई रेस का ट्रैक नहीं है जहां हर कोई दौड़ता है. लेकिन यहां सभी के लिए अलगअलग रास्ते हैं. अपनी यात्रा का खूब आनंद लीजिए, जितना कि आप ले सकते हैं. अंत में उन महान विचारकों को साधुवाद.

अनुशा शुक्ला, 11 वर्ष,जबलपुर

उन्नति बंसल, 10 वर्ष
मेरठ

रात

रात अंधेरी और अकेली होती है. मेरे सभी दोस्त गहरी नींद में सोए हैं. मैं अपने बगीचे में गई कुछ फूल खिलने वाले हैं और कुछ टूट कर गिरने वाले हैं. वहां बिलकुल खामोशी छाई हुई है. मैं ने जैसे ही ऊपर देखा, चांद को अपनी ओर मुसकराते हुए चमकते देखा. मैं ने अपनी आंखें बंद कर लीं और चांद पर से बूढ़ी औरत ने मेरे ललाट को चूम लिया और मुझे सोते हुए चिड़ियों के पास ले गई. वह मुझे पहाड़ों पर ले गई जहां हवा ताजी थी. आप को विश्वास नहीं होगा कि हवा इतनी साफ हो सकती है. रात आकाश में उड़ते हुए चमगादड़ हमारे दोस्त हो सकते हैं. यह समय है जब आप को भरोसा होगा कि वहां अंधेरा है और प्रकाश है. जब मैं इस बारे में सोच रही थी तब बूढ़ी औरत ने कुछ कहा और गायब हो गई. उस के और मेरे बीच एक रहस्य यों ही बना रहा.

आएशा मेयास, 12 वर्ष
नई दिल्ली

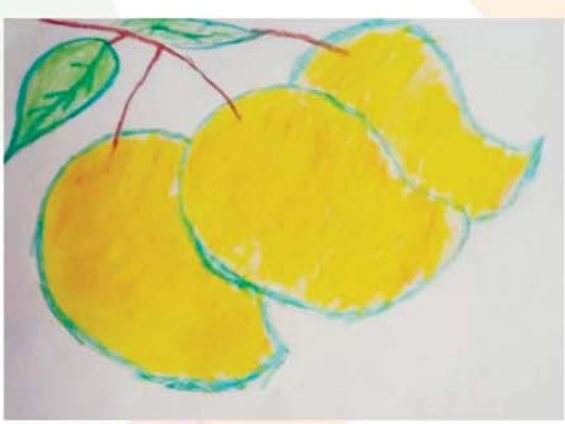

अस्मि राजपूत, 7 वर्ष
नवी मुंबई

बादल और सूरज

सूरज पीला है और बादल नीले हैं, जो एक प्रकार का चमकता हुआ रंग है. उन के बीच का बंधन एक बैल की तरह मजबूत है, लेकिन चतुराई भी वैसी ही है जैसे एक लोमड़ी की चतुराई. सूरज की किरणें उतनी लंबी होती हैं जितनी कि गर्मियों के प्रथम सप्ताह, लेकिन जाड़े में ये देर से आती हैं. आसमान में बादल छाए हैं और खूबसूरत पक्षी मंडरा रहे हैं. बादल और सूरज प्रकृति की खूबसूरती हैं, जो हमेशा अपनी ड्यूटी में दिन भर लगे रहते हैं. वे प्रकृति की तरफ से हमें उपहार की तरह हैं, जिन के पास कुछ अद्भुत गुण और विशेषताएं हैं. सूरज का सुनहरा समय उतना ही कीमती है जितना कि तारों का, जो बिलकुल वैसा ही दिखता है जैसा जार में पड़ा ताबीज होता है. आसमान में कालेकाले बादल कभीकभी गरजने लगते हैं.

राधिका दाघीच, 11 वर्ष, राजस्थान

माशरा फातिमा, 12 वर्ष
नई दिल्ली

यह ट्रेन है. इसे हमारे 6 वर्षीय पाठक राघव गंभीर ने उत्तर प्रदेश से बना कर भेजा है.

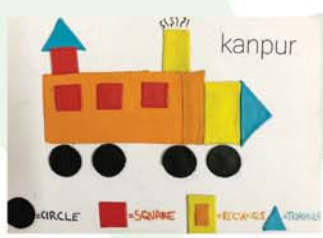

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

कैंप में चिप्स के पैकेट्स

कहानी ● कुसुम अग्रवाल

मौसम बदल गया था. ठिठुरती ठंड अपना बोरियाबिस्तर समेट कर जा चुकी थी और इस के साथ ही बढ़ गई थी चुनमुन और ताान्या की उछलकूद. अब वे घर में कहां टिकने वाले थे. अमेरिका से आए चाचा वहां रह रहे थे. इस के अलावा उन्हें अपने भतीजे और भतीजी की चापलूसी करने की आदत थी.

‘‘चाचा, हमें कहीं घूमने जाना है,’’ ताान्या ने इठलाते हुए अपने दीपक चाचा से कहा.

‘‘हां चाचा, हम घर में बैठेबैठे बोर हो गए हैं. इस कोरोना ने तो हमारा खेलकूद ही बंद कर दिया है, पर अब हम नहीं रुक सकते. आप कैंपिंग के लिए चलो,’’ चुनमुन ने निवेदन किया.

लेकिन ताान्या के लिए कैंपिंग शब्द नया था. ‘‘यह कैंपिंग क्या होता है?’’

‘‘अरे बुद्धू इतना भी नहीं समझती, कैंपिंग का मतलब है कहीं तंबू तान कर, उसे ही घर समझ कर, उस में रहना,’’ चुनमुन ने समझाया.

‘‘पर हम तंबू में क्यों रहेंगे? हमारे पास तो इतना सुंदर घर है न,’’ तान्या ने अपनी बाहें फैलाते हुए कमरे में घूमते हुए कहा.

‘‘चाहे कितना ही सुंदर घर क्यों न हो, कैंपिंग के समय तंबू में रहने का मजा ही अलग होता है. हमारा घर तो शहर के बीचोंबीच है. सारे दिन ट्रैफिक का शोर सुनाई देता है. हम कैंपिंग के लिए कहीं दूर नदी किनारे, पहाड़ों पर या जंगल में जाएंगे, प्रकृति की गोद में,’’ चुनमुन ने कैंपिंग के खयालों में डूबते हुए कहा और फिर चाचा का हाथ पकड़ बोला, ‘‘चाचा, आप तो अमेरिका से आए हो. वहां कैंपिंग का बहुत प्रचलन है. पापा तो बहुत डरपोक हैं. वे कैंपिंग के लिए कभी नहीं ले जाएंगे. आप ही हमें ले कर चलना.’’

‘‘हां, ले चलूंगा पर तुम्हें मेरा कहना मानना होगा, जैसा मैं कहूं वैसा ही करना होगा.’’

‘‘हां, चाचा, हम वैसा ही करेंगे जैसा आप कहोगे,’’ तान्या और चुनमुन ने एक स्वर में कहा. वे किसी भी हाल में कैंपिंग के रोमांच का मौका चूकना नहीं चाहते थे.

‘‘वैरी गुड,’’ चाचा ने खुश होते हुए कहा और फिर बोले, ‘‘इस से पहले कि हम कैंपिंग पर जाएं मैं तुम्हें एक किस्सा सुनाता हूं.

‘‘सुनो, पिछले वर्ष मैं, तुम्हारी चाची और तुम्हारे दोनों भाई आर्यन और ऋषि कैलिफोर्निया के योसेमिटी नैशनल पार्क कैंपिंग के लिए गए थे. हम ने पूरी तैयारी की थी. वहां लगाने के लिए तंबू, खानेपीने का सभी सामान, कीड़ेमकोड़ों से बचने की दवाई, आग जलाने का सामान, लालटेन, पानी, फर्स्ट ऐड बौक्स, ताश और अन्य गेम्स वगैरह सबकुछ ले लिया था. हम ने अपने स्विमिंग कौस्ट्यूम्स भी रख लिए थे. कैमरा तथा दूरबीन भी ले लिया था.

‘‘हम सुबह करीब 11 बजे कैंपिंग एरिया में पहुंच गए. हम ने करीब एक घंटे में अपना तंबू तान लिया और वहां रहने की अन्य व्यवस्था भी कर ली. आर्यन और ऋषि को

बहुत मजा आ रहा था. तंबू के अंदर बिस्तर लगाते ही वे सभी उस पर उलछकूद मचाने लगे. तब मैं ने कहा, चलो, पहले हाइकिंग पर चलते हैं.''

''हाइकिंग क्या होती है चाचा?'' तान्या ने पूछा.

''बुद्धू, हाइकिंग का मतलब है किसी प्राकृतिक स्थल के ऊंचेनीचे रास्तों पर पैदल भ्रमण करना,'' चुनमुन को तान्या के बीच में टोकने पर गुस्सा आ रहा था. वह जल्दी से पूरी घटना सुनना चाहता था.

चाचा ने फिर कहना शुरू किया, ''उन्होंने मेरा कहना माना और झट से हाइकिंग पर चल पड़े.

''थोड़ी दूर चलने के बाद ही एक झरने में नहाने का आनंद लिया. स्विमिंग कौस्ट्यूम साथ ही थे इसलिए हमें कोई दिक्कत नहीं हुई.

''हम ने खूब फोटोग्राफी की. आर्यन को वहां बहुत मजा आ रहा था. वह अपना मनपसंद गीत गाने लगा. उस का गाना सुनने में हमें भी बहुत आनंद आ रहा था.

''जब हम थक गए तो हम अपने कैंप की ओर वापस लौट आए. हम ने कैंप फायर पर अपना खाना गरम किया और अपने साथ लाए तरहतरह के व्यंजनों का आनंद लिया. आर्यन को चिप्स बहुत पसंद हैं, अतः हम चिप्स के पैकेट्स भी साथ लाए थे.

''रात ढलने को थी. देर रात तक बाहर रहना उचित नहीं था. हम सब ने तंबू में जाना ही उचित समझा. तंबू में लालटेन जला कर हम लूडो खेलने लगे. हमें बहुत मजा आ रहा था कि ऋषि ऊंघने लगा.

''चलो, अब हम सभी सो जाते हैं. मैं ने तुम्हारी चाची और बच्चों को कहा. पर याद रहे

हमें सोने से पहले अपना सारा खानेपीने का सामान बाहर बने फूड बौक्स में रखना है, मैं ने सब को चेतावनी देते हुए कहा.

‘‘ठीक है, पापा, हम सारा सामान रख देते हैं,’’ कह कर ऋषि और आर्यन खानेपीने का सामान फूड बौक्स में रख आए. फिर हम ने अपने टैंट को अंदर से अच्छी तरह बंद किया और सो गए.

‘‘आधी रात करीब 2 बजे किसी ने हमारे टैंट के बाहर आवाज लगाई कि उठो तुम्हें खतरा हो सकता है.

‘‘मैं डर के मारे जाग गया. हमारी नींद उड़ गई. मैं हिम्मत कर के बाहर निकला तो देखा एक नैशनल पार्क सुरक्षा कर्मचारी हमारे टैंट के बाहर खड़ा है.

‘‘क्या बात है? कैसा खतरा?’’ मैं ने उस से पूछा.

‘‘क्या आप के टैंट में खानेपीने का कोई सामान है?’’ उस ने मुझ से प्रश्न किया.

‘‘हम ने सारा सामान फूड बौक्स में रख दिया था,’’ मैं ने सुरक्षा कर्मचारी से कहा.

‘‘शायद आप से गलती हुई है. आप दोबारा देखिए,’’ सुरक्षा कर्मचारी ने फिर कहा.

उस की बात सुन कर मैं टैंट के अंदर गया और मैं ने ऋषि और आर्यन से पूछा, ‘‘क्या तुम ने खानेपीने का सारा सामान फूड बौक्स में रख दिया था?’’

‘‘हां पापा, सब रख दिया था केवल चिप्स के पैकेट्स छोड़ कर, मैं ने सोचा था यदि हमें रात में भूख लगेगी तो हम ये खा लेंगे,’’ ऋषि ने अपने तकिए के नीचे से चिप्स के पैकेट्स निकाल कर दिखाते हुए कहा.

मैं सिर झुकाए बाहर आया और सुरक्षा कर्मचारी को सारी बात बताई.

‘‘जानते हो, आप की एक छोटी सी भूल से आप का जीवन खतरे में पड़ सकता था, मैं ने देखा एक भालू आप के टैंट की ओर बढ़ रहा था. शायद उस की नाक तक आप के टैंट में पड़े चिप्स के पैकेट्स की खुशबू पहुंच गई थी.’’

भालू के आने की बात सुन कर ऋषि और

आर्यन घबरा गए और ऋषि ने झटपट चिप्स के पैकेट्स उठाए और उन्हें फूड बौक्स में रख आया, फिर सुरक्षा कर्मचारी से बोला, ‘‘अंकल, अब तो भालू नहीं आएगा न.’’

सुरक्षा कर्मचारी ने हंसते हुए कहा, ‘‘नहीं अब नहीं आएगा. अब आप सभी सुरक्षित हो और निश्चित हो कर सो जाओ. मैं आप का ध्यान रखूंगा.’’

‘‘सुरक्षा कर्मचारी की बात सुन कर ऋषि और आर्यन फिर से खर्राटे भरने लगे, परंतु मेरी और चाची की आंखों से नींद कोसों दूर थी. हम डर गए थे. पर जल्दी ही हमें भी नींद आ गई. हम उस कैंप में दो दिन और रहे परंतु फिर हम ने पूरी सावधानी बरती और हमें कोई भी परेशानी नहीं हुई.’’

ताान्या और चुनमुन को भी चाचा की बात सुनतेसुनते नींद आने लगी थी. मगर वे यह समझ गए कि कैंपिंग में बहुत मजा है, पर खतरा भी है. उन्हें चाचा का कहना मानना है, तभी वे कैंपिंग का पूरा आनंद उठा पाएंगे. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : रास्ता बताओ :

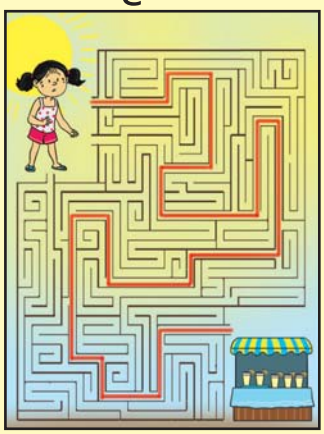

पृष्ठ 15 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

पृष्ठ 19 : मक्खियों को ढूंढ़ें :

पृष्ठ 31 : कौन सा कुत्ता किस का :

पृष्ठ 16 : शब्दों को सुलझाएं :

1. बाघ
2. जाइंट पांडा
3. तेंदुआ
4. भेड़िया
5. सफेद गैंडा
6. ध्रुवीय भालू
7. एशियाई हाथी
8. बब्बर शेर
9. हिम तेंदुआ
10. ब्लू व्हेल
11. गंजा सिर वाला बाज
12. जैगुआर
13. लाल पांडा
14. हूपिंग क्रेन
15. गैलापैगोस पेंगुइन
16. गोरिल्ला

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

The Caravan · Champak · सरिता · गृहशोभा · चंपक · मुक्ता · सरस सलिल · फार्मफूड · सत्यकथा · मनोहर कहानियां

ગૃહશોભા · ચંપક · सरस सलिल · गृहशोभा · चंपक · सरस सलिल · गृहशोभा · ಕೇರಳ ಜ್ಯೋತಿ · சம்பக் · சரல் · గృహశోభ · ചിപ്പി

ગૃહશોભા · ಗೃಹಶೋಭ · ചന്ദമാമ · सरिता · चंपक · Highlights CHAMPS · Highlights Genius · MOTORING WORLD

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/05/2021. Pgs. 52.

स्टोमाफिट

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

छुट्टीयों में घूमने आये हो जनाब,
खाये जा रहे हो बर्गर और कबाब,
कहीं छुट्टीयाँ न कर लेना खराब!

पेट की और गर्मी की छुट्टीयाँ

हा हा हा, अरे भाग्यवान! छुट्टीयों में आयें हैं, स्टोमाफिट भी साथ लाये हैं। डर को जाओ भूल, लो स्टोमाफिट और रहो कूल!

अपच व एसीडिटी से तुरंत आराम

New Pack

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

हेमोकॉल

बेहतरीन स्वाद

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

निम्नलिखित अवस्था में लाभदायी

गर्भधारण, हुकवार्म, पेट में कीड़े, मासिक धर्म, साधारण कमजोरी, बीमारी या संक्रमण, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट

थकान मिटाये तंदरुस्ती बढ़ाये

New Pack

शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वादिष्ट

450ML, 300ML

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें